रुपये 10

सेवा समर्पण

वर्ष-39, अंक-11, कुल पृष्ठ-36, श्रावण-भाद्रपद, विक्रम सम्वत् 2079, अगस्त, 2022

स्वतंत्रता दिवस

15 अगस्त

दक्षिणी विभाग में प्रशिक्षण वर्ग

सेवा भारती दिल्ली (दक्षिणी विभाग) का एक दिवसीय शिक्षिका प्रशिक्षण वर्ग दिन शनिवार, दिनांक 16.7.2022 को राधा कृष्ण विद्या मन्दिर, एचपी गैस गोदाम के पास, कालकाजी, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। इसमें विभाग की सभी शिक्षिका बहनों के साथ निरीक्षिका बहनें भी उपस्थित रहीं। शिक्षिका प्रशिक्षण वर्ग में उद्घाटन और समापन सत्र सहित कुल 6 सत्र हुए। सभी सत्रों के विषय निम्न प्रकार से रहे–प्रशिक्षण का महत्व, सेवा भारती में शिक्षिकाओं की भूमिका, आचरण और व्यवहार, केन्द्र और बस्ती का सम्बन्ध, शिक्षिकाओं के माध्यम से संस्कार तथा गट अनुसार शिक्षा और स्वावलम्बन पर भी विषय लिए गये । सेवा भारती प्रांत मंत्री श्री शैलेन्द्र जी, प्रांत सह संगठन मंत्री श्री सुनील जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, दक्षिणी विभाग के विभाग संघ चालक डॉक्टर दीपक शुक्ला जी, वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं पूर्व दक्षिणी विभाग अध्यक्ष श्री खजान सिंह शर्मा जी, विभाग अध्यक्ष डॉक्टर अनंगपाल जी, विभाग मंत्री श्री इन्द्रनील जी, विभाग सह मंत्री श्री विनोद श्रीवास्तव जी, तथा बदरपुर जिले के सहमंत्री श्री रजनीकान्त जी के द्वारा उपरोक्त सभी विषय क्रमशः लिए गए।

एक सफल प्रयास

8 जुलाई को हिन्दू समाज की एक लड़की, जो कोरोना काल में अनाथ हो गई थी, के विवाह समारोह में शामिल होने का मुझे अवसर मिला। सेवा भारती, प्रताप शाखा, स्कूल ब्लाक, के स्वयंसेवक बन्धुओं, विश्व हिन्दू परिषद, शकरपुर एवं समाज के प्रतिष्ठित समाज सेवियों के सहयोग से यह कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। अनेक गणमान्य लोगों ने सम्मिलित होकर वर–वधू को अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

कुष्ठ आश्रम के लिए सहयोग

पूर्वी दिल्ली ताहिरपुर कुष्ठ आश्रम में सेवा भारती द्वारा संचालित चिकित्सा केन्द्र एवं बालवाड़ी के में सहयोग के लिए श्री वर्मा जी ने डॉ. हरेन्द्र को चेक द्वारा राशि प्रदान करते हुए। इस सहयोग के लिए श्री वर्मा जी का बहुत–बहुत धन्यवाद।

परामर्शदाता
आचार्य मायाराम पतंग
डॉ. राम कुमार

सम्पादक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

सहसम्पादक
शिवाली अग्रवाल

कार्यालय
सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर

एक प्रति : 10/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 100/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-39, अंक-11, कुल पृष्ठ-36, अगस्त, 2022

विषय - सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
सम्पादकीय		04
दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल?	नरेन्द्र सहगल	06
बढ़ते भारत की झलक : स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव	ऋषिदेव	09
विभाजन का दर्द	अरविन्द कुमार	10
श्रावण मास का आध्यात्मिक महत्व	राजन दीक्षित	12
रक्षाबंधन की कुछ रोचक कहानियाँ	दीप्ति	16
आजादी का उत्सव मनाएं	अंजू पाण्डे	17
शबरी सेवा समिति के अनूठे कार्य	रश्मि दाधीच	18
प्रभु की प्राप्ति किसे होती है	आचार्य राजन दीक्षित	20
बाल गीत	नीलम कालरा	21
गुरु की बात मानो	हेमंत शर्मा	22
बाल कहानी : संतुष्टि	नीलम कालरा	23
करोना की पकड़	आचार्य मायाराम पतंग	24
'टींस 4 सेवा' द्वारा आयोजित हुआ 'मेंटरशिप' कार्यक्रम	दीप्ति	26
बारहपाल में आने वाली घुमंतू जातियों का महत्व	शैलेन्द्र विक्रम	27
लस्सी का कुल्हड	विनोद श्रीवास्तव	30
मानस का सुन्दर कांड	कृष्ण लाल भाटिया 'शिक्षार्थी'	31

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

महामहिम मुर्मू

इस समय पूरा देश स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मना रहा है। ऐसे अवसर पर एक जनजाति महिला श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने 25 जुलाई को देश के सर्वोच्च पद यानी राष्ट्रपति के लिए शपथ ली। भारत के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ कि जनजाति समुदाय की कोई महिला देश की प्रथम नागरिक बनी है, यह कोई छोटी घटना नहीं है।

द्रौपदी जी के राष्ट्रपति बनने से जनजाति समाज में एक नया उत्साह, नई ऊर्जा, नई सोच देखने को मिल रही है। यह ऊर्जा और यह सोच आने वाले समय में जनजाति समाज में एक जागृति लाएगी।

इसकी झलक तो अभी से देखने को मिल रही है। द्रौपदी जी जिस दिन राष्ट्रपति पद के लिए निर्वाचित हुईं, उस दिन दिल्ली से लेकर झारखंड, छत्तीसगढ़, राजस्थान, महाराष्ट्र, नागालैंड, मणिपुर, असम आदि राज्यों के जनजाति-बहुल क्षेत्रों में जो नृत्य हुआ उसका दूरगामी परिणाम होने वाला है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने द्रौपदी दीदी को राष्ट्रपति पद पर पहुंचाकर कई लोगों और विचारधाराओं का शिकार किया है। याद कीजिए उस दिन को जब श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) ने द्रौपदी मुर्मू को राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार घोषित किया। जैसे ही समाचार आया कि राजग ने द्रौपदी मुर्मू को राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाया है, वैसे ही कई राजनीतिक दलों के नेताओं और कुछ खास विचारधारा वाले लोगों में मायूसी छा गई।

ऐसे लोगों को लग रहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने द्रौपदी मुर्मू को राष्ट्रपति बनाकर गाँव-गाँव में अपने लिए एक विशेष स्थान बना लिया है। उन्हें ऐसा इसलिए लग रहा है कि श्रीमती द्रौपदी के राष्ट्रपति बनने से हर वह व्यक्ति गौरवान्वित अनुभव कर रहा है, जो गरीब है, गाँव में रहता है, बहुत मुश्किल से लिख-पढ़ पाता है...। द्रौपदी जी भी इन परिस्थितियों से निकली हैं। इसलिए हर गरीब को लग रहा है कि उसी के घर की कोई महिला राष्ट्रपति बनी है। आम जनता यह भी जानती है कि द्रौपदी दीदी को यहाँ तक पहुँचाने में भाजपा और प्रधानमंत्री श्री मोदी का ही हाथ है। यही कारण है कि आज हर गाँव में द्रौपदी दीदी के साथ-साथ श्री नरेंद्र मोदी की भी जय-जयकार हो रही है। इस जय-जयकार की गूँज जितनी ऊँची होगी विपक्ष उतना ही छोटा होता जाएगा।

श्रीमती मुर्मू भगवान महादेव की भक्त हैं। जैसे ही उनकी यह जानकारी पूरी दुनिया में फैली वे लोग परेशान हो गए, जो हिंदू देवी-देवाताओं का मजाक उड़ाते हैं, उन्हें अपमानित करते हैं और भोले-भाले हिंदुओं का मतान्तरण करने में हर दांव-पेंच खेलते हैं। उल्लेखनीय है कि हिंदू विरोधी कुछ तत्व लोभ-लालच और कभी जबर्दस्ती हिंदुओं, विशेषकर जनजातियों और वंचित समाज के लोगों का मतान्तरण करते हैं। द्रौपदी जी के राष्ट्रपति बनने से हिंदू-विरोधी तत्वों का मनोबल कमजोर हुआ है और समाज के दबे-कुचले लोगों का आत्मविश्वास बढ़ा है। ऐसे में अब किसी गरीब या जरूरतमंद को लोभ-लालच से मतान्तरित करना आसान नहीं होगा।

उल्लेखनीय है कि जनजाति क्षेत्रों में ईसाई और जिहादी तत्व लोगों को मतान्तरित करने के लिए वर्षों से सक्रिय हैं। ये तत्व बात-बात में सनातन धर्म की बुराई करते हैं और हिंदुओं की आस्था को कुचलकर उन्हें अपनी ओर आकर्षित करते हैं। ऐसा निरन्तर करने से लोगों को इन्हीं तत्वों की बात सही लगने लगती है और वे मतान्तरण करने के लिए तैयार हो जाते हैं। लेकिन अब एक शिवभक्त द्रौपदी दीदी को देश के सर्वोच्च पद पर बैठे देखकर लोग चकित हैं। लोग यह कह रहे हैं कि भगवान शिव की कृपा से ही द्रौपदी दीदी देश की प्रथम नागरिक बनी हैं। जैसे-जैसे यह सोच गाँव-गाँव में फैलेगी तब मतान्तरण के लिए मंडराते गिद्ध आकाश से गायब हो जाएंगे।

इस बात को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी अच्छी तरह जानते हैं और यही कारण है कि उन्होंने द्रौपदी दीदी को राष्ट्रपति बनवा दिया। इस दूरदर्शी सोच के लिए श्री नरेंद्र मोदी की जितनी भी प्रशंसा की जाए, वह कम होगी। ❐

पाथेय

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।

सरलार्थ : श्रीकृष्ण ने कहा कि हे अर्जुन, कर्म करना तुम्हारा अधिकार है, फल की इच्छा करने का तुम्हारा अधिकार नहीं। कर्म करना और फल की इच्छा न करना, अर्थात फल की इच्छा किए बिना कर्म करना, क्योंकि मेरा काम फल देना है।

शाश्वत धर्म

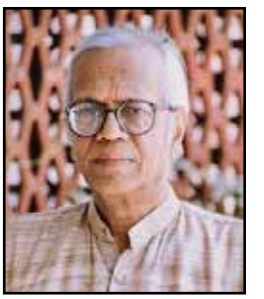

भारतीय संस्कृतिक एकता तथा राष्ट्रीयता का स्वरूप स्पष्ट एवं व्यापक है। आश्चर्यजनक बात यह है कि अब भी कुछ लोग इस भारत को एक राष्ट्र नहीं, अलग-अलग राज्यों का समूह मानते हैं। सच तो यह है कि वे लोग भारत की एकात्मकता को देखना ही नहीं चाहते। वे इतिहास बोध को खो चुके हैं। विदेशियों के भ्रांतिपूर्ण इतिहास को ही सत्य मानने लगे हैं। वे यही समझ रहे हैं कि आर्य भारत में बाहर से आए। द्रविड़ अलग संस्कृति है। उन्हें दक्षिण भारत के नाम तथा धार्मिक रीति-रिवाज भी दिखाई नहीं पड़ते। सब को मानना पड़ेगा कि भारत की संस्कृति एक ही है वह सत्य सनातन हिन्दू संस्कृति है।

– **कमल किशोर गोयनका,** वरिष्ठ साहित्यकार

अगस्त 2022 माह के स्मरणीय दिवस

दिनांक	वार	महत्व
01.08.2022	सोमवार	लोकमान्य तिलक पुण्यतिथि
02.08.2022	मंगलवार	नागपंचमी
03.08.2022	बुधवार	कल्कि दिवस
04.08.2022	गुरुवार	गोस्वामी तुलसीदास जयंती
07.08.2022	रविवार	श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर पुण्यतिथि
09.08.2000	मंगलवार	स्वतंत्रता संग्राम दिवस, मोहर्रम
11.08.2022	गुरुवार	खुदीराम बोस बलिदान दिवस
12.08.2022	शुक्रवार	रक्षाबंधन
13.08.2022	शनिवार	अहिल्या बाई होलकर पुण्यतिथि

दिनांक	वार	महत्व
15.08.2022	सोमवार	स्वतंत्रता दिवस
16.08.2022	मंगलवार	हलषष्ठी, परमहंस समाधि दिवस
17.08.2022	बुधवार	मदनलाल ढींगरा बलिदान दिवस
19.08.2008	शुक्रवार	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
20.08.2022	शनिवार	गूगानवमी
23.08.2022	मंगलवार	एकादशी कथा
24.08.2022	बुधवार	गोवत्स द्वादशी पर्व
29.08.2022	सोमवार	खेल दिवस
31.08.2022	बुधवार	गणेश चतुर्थी, चंद्रदर्शन निषेध

दे दी हमें आजादी बिना खड़ग बिना ढाल?

■ नरेन्द्र सहगल

परतंत्रता के विरुद्ध निरंतर एक हजार वर्षों तक सशस्त्र संघर्ष करने के फलस्वरूप अंतत: हमारा अखंड भारतवर्ष दो भागों में विभाजित होकर 'स्वतंत्र' हो गया। गुलामी की जंजीरों को तोड़ डालने के लिए कश्मीर से कन्या कुमारी तक भारत के प्रत्येक कोने में यह जंग लड़ी गयी। वीर योद्धाओं, क्रांतिकारियों, संतों, आश्रमों, गुरुकुलों ने विदेशी और विधमी शासकों को अपनी मातृभूमि से उखाड़ फैंकने के लिए अपने बलिदान दिए। माताओं-बहनों के जलती आग में कूदकर जौहर किये। परतंत्रता के इस कालखंड में लाखों देशभक्त युवकों ने फांसी के तख्त चूमे। वास्तव में हमारा इतिहास परतंत्रता का ना होकर गुलामी के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष का वीरव्रती इतिहास है।

सम्राट दाहिर, बाप्पा रावल, राणा सांगा, राणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, गुरु गोविन्द सिंह, छत्रसाल, सुहेल देव, 1857 के महान योद्धा, वासुदेव बलवंत फड़के, सतगुरु रामसिंह, सावरकर, सरदार भगत सिंह, सुभाष चन्द्र बोस और डॉ. हेडगेवार सहित लाखों क्रांतिकारियों और करोड़ों देशवासियों ने स्वतंत्रता देवी के खप्पर को अपने लहू से लबालब भरा है। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में पांच लाख से भी अधिक देशभक्त नागरिकों ने अंग्रेजों से लड़ते हुए अपने बलिदान दिए हैं। साम्राज्यवादी ब्रिटिश हुकूमत को हिलाकर रख देने वाले इन शहीदों को भुला देना महापाप में इतिहासिक अन्याय होगा। भारत का कोई गाँव ऐसा नहीं होगा जिसमें कोई 'शहीद' ना हुआ हो। अत्याचारी, विदेशी-विधमी निरंकुश शासकों को तख्ता पलटने के लिए वीरांगना नारियों ने भी अपनी तलवार, पिस्तौल और बमों के साथ खून के फाग खेले हैं।

गुलामी के कलंक को मिटाने के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध जंग में देश के प्रत्येक कोने में राष्ट्रभक्त

क्रांतिकारी युवकों और अनेक संस्थाओं ने सशस्त्र प्रतिकार को बुलंद करने के लिए हथियार उठाए थे। क्रन्तिकारी संगठन अनुशीलन समिति, बब्बर खालसा, हिंदुस्तान समाजवादी प्रजातांत्रिक सेना, अभिनव भारत, आर्य समाज, हिन्दू महासभा, आजाद हिन्द फौज, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, राष्ट्रवादी लेखकों, कवियों एवं वीररस के साहित्यकारों की मुख्य भूमिका को ठुकराकर सारे स्वतंत्रता संग्राम को एक ही नेता और एक ही दल के खाते में दाल देने का जघन्य अपराध भी इसी देश में हुआ है।

यह घोर कुकृत्य उन तथाकथित लोगों ने किया है जिन्होंने अपनी जान को हथेली पर रखकर स्वतंत्रता संग्राम को धार देने वाले क्रांतिकारियों को पथभ्रष्ट तथा सिरफिरे तक कह दिया था। यह वही लोग हैं जो हाथ में कटोरा लेकर अंग्रेजों से आजादी की भीख मांगते रहे। भारत के विभाजन के लिए जिम्मेदार यह वही लोग हैं जिन्होंने लाखों बलिदानों को मिट्टी में मिला कर दिल्ली में बाजा बजा दिया – "दे दी हमें आजादी बिना खड़ग बिना ढाल... दागी न कहीं तोप ना बन्दूक चलाई... दुश्मन के किले पर भी ना की तूने चढ़ाई...। इसी गीत में यह कह कर कि 'चुटकी में दिया दुश्मनों को देश से निकाल', गीतकार ने एक हजार वर्षों तक चले सशस्त्र संग्राम को चुटकी में इतिहास के कूड़ेदान में फेंक दिया।

अखंड भारत की पूर्ण स्वतंत्रता के लिए वर्षों पर्यंत बलिदान देने वाले वास्तविक सेनानियों के साथ विश्वासघात कर के भारत को खंडित करके, कथित आजादी की सारी मलाई चाटने वाले लोग आज भी जब 'दे दी हमें आजादी बिना खड़ग बिना ढाल' गीत को बजाते, सुनाते एवं सुनते हैं तो कलेजा फट जाता है। कल्पना करें कि फांसी के तख्तों पर लटकने वाले क्रांति योद्धाओं की आत्मा कितनी तड़पती होगी। यह गीत वास्तव में सरदार ऊधम सिंह, वीर सावरकर, रास बिहारी बोस, श्यामजी कृष्ण वर्मा, खुदीराम बोस, चाफेकर बंधु एवं सुभाष चन्द्र बोस का अपमान करके उनकी खिल्ली उड़ाता है। यह गीत बम, बन्दूक, तलवार को धत्ता बता कर 'भीख के कटोरे' को भारत रत्न प्रदान करता है।

उल्लेखनीय है कि एक हजार साल के विदेशी अधिपत्य को भारत के राष्ट्रीय समाज ने एक दिन भी स्वीकार नहीं किया। आजादी की जंग को लड़ते हुए प्रत्येक पीढ़ी आने वाली पीढ़ी के हाथों में स्वतंत्रता संग्राम की बागडोर सौंपती चली गयी। पर जब यही कमान एक कट्टरपंथी अंग्रेज ईसाई पादरी 'ए ओ ह्यूम' द्वारा स्थापित एक दल के हाथों में आई तो याचक की तरह आजादी की भीख मांगने की कायर मनोवृति प्रारंभ हो गयीण फलस्वरुप सदियों पुराने आर्य राष्ट्र को भी काटकर पाकिस्तान बना दिया गया। संसार के नक्शे पर उभरकर आया यह पाकिस्तान भारत पर हुए इस्लामिक हमलावरों की जीत का विजय स्तम्भ है।

'बिना खड़ग के और बिना ढाल के आजादी मिली' यह दावा करने वाले अहिंसक योद्धाओं से पुछा जाना चाहिए की आपके दल के कितने नेताओं को अंग्रेजों ने फ़ासी पर लटकाया? एक को भी नहीं। सावरकर, भाई परमानन्द जैसे सैकड़ों क्रांतिकारियों की तरह कितने खद्दरधारियों ने काले पानी (अंदमान जेल) में अमानवीय यातनाएं सहीं? एक ने भी नहीं? लाला लाजपत राय को छोड़कर कितने सफेदपोश नेताओं ने अंग्रेज पुलिस की लाठियां खाई? एक ने भी नहीं। इसी सफ़ेद श्रेणी के कितने नेताओं ने भारत के विभाजन का विरोध करके स्वतंत्रता संग्राम को जारी रखने की बात कही? एक ने भी नहीं। क्रांतिकारियों की शहादतों को दरकिनार करने वालों से यह भी पूछा जाना चाहिए कि उन्होंने सरदार भगत सिंह इत्यादि युवा क्रांतिकारियों का विरोध क्यों किया? जबकि यही युवा स्वातंङ्ग योद्धा महात्मा गांधी जी को एक महान नेता का सम्मान देते रहे।

सत्याग्रह करके जेलों में जाना एक सराहनीय प्रयास था, इसमें कुछ भी गलत नहीं था। परन्तु यह कह देना कि केवल उन्हीं के कारण आजादी मिली यह तो अत्यंत निंदनीय है। अहिंसावादी सत्याग्रहियों को वास्तविक स्वतंत्रता सेनानी मान लेना उपहास का

विषय है। 1857 का स्वातंङ्ग संग्राम नामक विश्व प्रसिद्ध पुस्तक के लेखक और अंडमान जेल में पूरे 9 वर्षों तक यातनाएं सहने वाले वीर सावरकर के शब्दों में – "स्वाधीनता संग्राम का पूर्ण श्रेय कांग्रेस के अपने और गांधी जी के कन्धों पर लाद देना, देश के उन असंख्य हुतात्माओं ना केवल अन्याय ही है अपितु हमारे राष्ट्र के पुरुषत्व को नष्ट करने तथा समस्त भारत के पराक्रम को समूल उखाड़ देने का राष्ट्रघाती प्रयास भी है।"

यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है कि क्रांतिकारियों द्वारा किये जाने वाले बम धमाकों ने पूरे देश में क्रांति की अलख जगा दी। इन युवकों ने फ़ासी के तख्तों पर चढ़कर ब्रिटिश हुकूमक के अत्याचारों को जन-जन तक पहुंचा दिया। इस सशस्त्र क्रांति ने भारतीय सेना मं् भी अंग्रेजों के विरुद्ध वातावरण बनाया, जिसके फलस्वरूप सेना में विद्रोह हो गया और हिन्दू सैनिकों की बंदूकों के मुंह अंग्रेजों की ओर मुड़ गए। उधर अब तक अंग्रेजों का साथ देने वाले रियासती राजाओं ने भी ब्रिटिश हुकूमत की हाँ में हाँ मिलाने की रस्मअदायगी को तिलांजलि देना शुरू कर दिया। शहरों से ग्रामीण क्षेत्रों तक बगावती स्वर तेज होने लगे। इसी वजह से अंग्रेजों का भारत से भागकर या यूं कहें कि अपनी जान बचा कर अपने घर लौटना पड़ा।

उस समय के इंग्लैंड के प्रधानमंत्री एटली ने ब्रिटिश संसद में चर्चिल द्वारा पूछे गए प्रश्न के उत्तर में स्पष्ट कहा था कि – "ब्रिटिश सरकार के भारत को सत्ता सौंप देने के दो कारण हैं। पहला यह कि भाड़े पर देश के हितों को बेचने वाली भारतीय सेना अब अंग्रेजों की वफादार नहीं रही तथा दूसरा यह कि ब्रिटिश सरकार भारत को अपने पंजे में दबाए रखने के लिए इतनी विशाल अंग्रेजी सेना खड़ी करने में असमर्थ है।"

भारत का विभाजन करके पाकिस्तान का निर्माण करने वाले इन्हीं एटली साहब ने एक स्थान पर कहा था कि – "हमने 1942 के आन्दोलन के कारण भारत नहीं छोड़ा। हमने भारत छोड़ा नेताजी सुभाष चंद्र बोस के कारण। नेताजी अपनी फ़ौज के साथ बढ़ते-बढ़ते इम्फाल तक जा चुके थे। उसके तुरंत बाद नौसेना और वायुसेना में विद्रोह हो गया था।" जाहिर है कि अंग्रेजों ने चरखे की घूं-घूं अथवा सत्याग्रहियों द्वारा दबाव पड़ने से भारत को नहीं छोड़ा। उन्होंने भारत को छोड़ा भारतीयों की मार खा कर।

इसमें कोई दो मत नहीं हो सकते कि स्वतंत्रता संग्राम में नब्बे प्रतिशत भागीदारी सशस्त्र योद्धाओं ने की थी। दूसरे विश्व युद्ध में विजयी होने के बावजूद भी ब्रिटिश साम्राज्यवाद के परखच्चे उड़ चुके थे। एक समय आधी से ज्यादा दुनिया पर अपना परचम लहराने वाले ब्रिटेन का सैन्य एवं आर्थिक दृष्टि से दिवाला पिट चुका था। यदि द्वितीय विश्व युद्ध में अंग्रेजों का पूर्णतया विरोध करके भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का साथ देते हुए अभिनव भारत, आर्य समाज, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को साथ लेकर स्वतंत्रता संग्राम को आगे बढ़ाया होता तो भारत का विभाजन रुक सकता था। परन्तु ऐसा हुआ नहीं। समस्त कांग्रेस विशेषतया पंडित जवाहर लाल नेहरु के राजनीतिक स्वार्थ आड़े आ गए। पंडित जी नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के आगे बोने पड़ जाते। अत: उन्होंने राष्ट्रहित को तिलांजलि देकर नेताजी का विरोध किया और देश के विभाजन को स्वीकार कर लिया।

अंग्रेजों के सीने पर पहली गोली मरने वाले मंगल पांडे से लेकर आजाद हिन्द फ़ौज द्वारा ब्रिटिश राज पर अंतिम एवं निर्णायक प्रहार तक के सारे स्वतंत्रता संग्राम को भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से लिखा जाना चाहिए था परन्तु खंडित भारत की सत्ता पर काबिज होने वाले अंग्रेजभक्त शासकों ने इस इतिहास को सिरे से नकार कर स्वतंत्रता संग्राम को एक ही नेता और एक ही दल के हवाले कर दिया। परिणाम स्वरुप लगभग 150 वर्षों तक भारतीयों को कुचलने वाले अंग्रेजों को कांग्रेसियों ने बाकायदा तिलक लगाकर विदाई दी। अन्यथा यह क्रूर शासक भारत की भूमि पर ही कुत्ते की मौत मारे जाते। ❐

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।)

बढ़ते भारत की झलक : स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव

■ ऋषिदेव

इस समय पूरा देश अपनी स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मना रहा है। इसका शुभारंभ देश की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण होने पर और राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की दांडी यात्रा की वर्षगांठ के अवसर पर 12 मार्च, 2021 को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से पदयात्रा को हरी झंडी दिखाकर किया था।

यह तो हम सब जानते हैं कि दांडी मार्च को नमक सत्याग्रह के तौर पर भी जाना जाता है। उल्लेखनीय है कि 1930 में अंग्रेजी शासन में भारतीयों को नमक बनाने का अधिकार नहीं था। भारतीयों को इंग्लैंड से आने वाले नमक का ही प्रयोग करना पड़ता था और इसके अलावा अंग्रेजों ने इस नमक पर कई गुना कर लगा दिया था। नमक जीवन के लिए बहुत जरूरी है इसलिए इस कर को हटाने के लिए महात्मा गांधी ने यह सत्याग्रह चलाया था। नमक भारत की आत्मनिर्भरता का एक प्रतीक था। अंग्रेजों ने भारतीयों की इस आत्मनिर्भरता पर चोट पहुंचायी। फिर महात्मा गांधी ने देशवासियों के दर्द को महसूस किया और नमक सत्याग्रह शुरू किया। तब वह आंदोलन जन-जन का आंदोलन बन गया था। 12 मार्च, 1930 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने नमक सत्याग्रह की शुरुआत की थी। इसलिए इस दिन स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव की शुरुआत की गयी, ताकि आत्मनिर्भर भारत का सपना पूरा हो सके और भारत अपना परचम पूरे विश्व में लहराये साथ ही भारत के विकास से दुनिया के विकास को भी प्रोत्साहन मिले।

इस वर्ष 15 अगस्त, 2022 को देश आजादी की 75वीं वर्षगाँठ मनाएगा। इसमें देश की अदम्य भावना के उत्सव व सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। चलिए विस्तार से जानते हैं कि क्या है आजादी का अमृत महोत्सव और इस महोत्सव पर क्या-क्या कार्यक्रम होंगे।

दरअसल आजादी का अमृत महोत्सव प्रगतिशील भारत की आजादी के 75 साल पूरे होने का उत्सव और इसके लोगों, संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास को मनाने के लिए भारत सरकार की एक पहल है। क्योंकि आजादी एक दिन में नहीं मिली, शताब्दियां लग गयीं, इन बातों को भी लोग समझ पाएं यह बहुत जरूरी है। देश की 75वीं वर्षगांठ का मतलब 75 वर्ष पर विचार, 75 वर्ष की उपलब्धियां, 75 वर्ष में कार्रवाई और 75 वर्ष पर संकल्प शामिल हैं, जो स्वतंत्र भारत के सपनों को साकार करने के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। यह आजादी का अमृत महोत्सव 15 अगस्त, 2022 को देश की आजादी की 75वीं वर्षगांठ से 75 सप्ताह पहले शुरू किया गया था। आजादी का अमृत महोत्सव भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक पहचान के बारे में प्रगतिशील है। यह महोत्सव भारत के लोगों को समर्पित है, जो आत्मनिर्भर की भावना से प्रेरित है और जिन्होंने भारत की अपनी विकासवादी यात्रा को आगे ले जाने में सहयोग दिया है। आजादी का अमृत महोत्सव की यह यात्रा 15 अगस्त, 2023 को एक वर्ष के बाद समाप्त होगी। यानि यह समारोह हमारी स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ से 75 सप्ताह पहले शुरू हुआ और 15 अगस्त, 2023 को समाप्त होगा।

कुल मिलाकर आजादी का अमृत महोत्सव भारत की आजादी के 75 साल पूरे होने का एक अखिल भारतीय उत्सव है। यह अभियान देश भर में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन के माध्यम से प्रकट किया जा रहा है, प्रत्येक आयोजन आजादी का अमृत महोत्सव के उद्देश्य से किया जा रहा है - 'संपूर्ण सरकार' दृष्टिकोण का पालन करते हुए अधिकतम 'जन भागीदारी' (भारत के नागरिकों की भागीदारी) सुनिश्चित करने के लिए भारत के सभी मंत्रालयों, राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की भूमिका अहम है। ❐

विभाजन का दर्द

■ अरविन्द कुमार

वर्षों तक अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी गई। इसमें अनगिनत लोगों ने अपनी जान दे दी। इसके बाद 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। इस स्वतंत्रता के साथ ही भारत का विभाजन भी हुआ और पाकिस्तान नामक एक देश विश्व के मानचित्र पर आया। आज यही पाकिस्तान और पाकिस्तान बनाने वाली सोच से पूरा भारत परेशान और हिंदू समाज आतंकित है। इसलिए इस पर विचार होना चाहिए कि विभाजन से हिंदुओं को क्या मिला!

आगे बढ़ने से पहले विभाजन की विभीषिका की चर्चा बहुत ही आवश्यक है। विभाजन के समय भारत में लगभग 30 करोड़ हिंदू और लगभग 5 करोड़ मुसलमान थे। उस समय भारत का क्षेत्रफल 43,19,263 वर्ग किलोमीटर था। चूंकि मुसलमानों ने मजहब के नाम पर देश का बंटवारा कराया था। इसलिए उनकी उस समय की आबादी के हिसाब से उन्हें 6,40,840 वर्ग किलोमीटर जमीन मिलनी चाहिए थी, लेकिन उन्हें 10,32,000 वर्ग किलोमीटर जमीन दी गई। यानी उनका जो हिसाब बनता था, उससे लगभग दोगुनी जमीन उन्हें दी गई। हिंदुओं के साथ एक छल यह भी हुआ कि अपना हिस्सा लेने के बावजूद अधिकतर मुसलमान पाकिस्तान नहीं गए। 1951 की विस्थापित जनगणना के अनुसार विभाजन के तुरंत बाद 72,26,000 मुसलमान भारत छोड़कर पाकिस्तान गए और 72,49,000 हिंदू और सिख पाकिस्तान से भारत आए। अब भारत में मुसलमानों की जनसंख्या लगभग 20 करोड़ है, वहीं पाकिस्तान में हिंदू एक प्रतिशत से भी कम रह गए हैं, जबकि विभाजन के बाद भी पाकिस्तान में लगभग 22 प्रतिशत हिंदू थे।

इस्लामिक गणराज्य पाकिस्तान में ऐसे हालात बना दिए गए कि वहां से हिंदुओं को पलायन करना पड़ा और वह सिलसिला अभी भी चल रहा है। ऐसा कोई दिन नहीं बीतता है कि जब कोई पाकिस्तानी हिंदू जान बचाने के लिए भारत न आता हो।

विभाजन के दौरान पाकिस्तान से भारत आने वाले हिंदुओं के साथ, जो अत्याचार हुए हैं, उसके उदाहरण पूरी दुनिया में नहीं मिलते हैं। 1947 में 10 साल के रहे बलबीर दीवान इस समय दिल्ली में रहते हैं। उन्होंने बताया, ''मेरा परिवार डेरागाजी खान में रहता था। एक दिन अचानक सैकड़ों मुसलमानों ने हिंदुओं के घरों पर हमला कर दिया। बहुत मुश्किल से हम लोगों की जान बची। दूसरे दिन हमारे मुहल्ले के सभी लोग केवल पहने हुए वस्त्र के साथ निकल गए। रेलगाड़ी से भारत आने लगे, तो रास्ते में मुसलमानों ने गाड़ी रोक दी और हिंदुओं को मारने-काटने लगे। उन्होंने मेरी मां और पिताजी को भी मार दिया। मैं लाशों के बीच ही कई घंटों तक सिसकता रहा। बाद में सेना आई और जो बचे थे, उन्हें भारत भेज दिया।'' उन्होंने यह भी बताया कि विभाजन के दौरान वे अपने परिवार के अन्य लोगों से भी बिछुड़ गए। इसलिए एक अनाथालय में पालन-पोषण हुआ। साथ ही पढ़ाई भी होती रही। इसलिए बाद में सरकारी नौकरी लगी और आज एक सम्मानित जीवन जी पा रहे हैं।

ऐसे ही कोटली, जो अब पीओके में है, के रहने वाली 90 वर्षीया सुनीता ने बताया कि लगभग दो महीने तक कोटली के सभी हिंदू बंधक बने रहे। उनकी एक बात सुनकर तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं। उन्होंने बताया कि शाम होते ही हर हिंदू परिवार की महिलाओं और लड़कियों को एक बड़े घर के अंदर बंद कर दिया जाता था और बाहर हिंदू लड़के पहरा दिया करते थे। वे लड़के साथ में मिट्टी का तेल भी रखते थे। यह सब इसलिए किया जाता था कि यदि रात में मुसलमान हमला करें तो कोई हिंदू मां-बेटी मुसलमानों के हाथ न लग जाए। और मिट्टी का तेल इसलिए रखा जाता था कि यदि हिंदू लड़के उनकी सुरक्षा करने में अपने को असमर्थ पाने लगें तो मिट्टी का तेल डालकर उन महिलाओं और लड़कियों

को जला कर मार दें, क्योंकि उनका उन जिहादियों के हाथों में जाने से अच्छा था मर जाना।

ऐसी हृदय-विदारक घटनाओं की कोई सीमा नहीं है। विभाजन से पीड़ित हर व्यक्ति का अपना-अपना दर्द है। अब वह दर्द और गहरा होता जा रहा है। लोग मानने लगे हैं कि एक बार फिर से भारत 1947 की ओर बढ़ता जा रहा है।

सच में देखें तो इस बात में दम है। जिस तरह से जिहादी तत्व इस देश में उत्पात मचा रहे हैं, वह हम सबके लिए चिंता की बात है। जिहादी जिसका भी चाहते हैं उसका गला काट देते हैं और कोई उनकी आलोचना करता है तो उसे भी मार देने की धमकी देते हैं। यह सब अचानक नहीं हो रहा है। हमें और आपको वह नारा याद होगा, जिसमें कहा जाता है, ''हंस कर लिया है पाकिस्तान, लड़ कर लेंगे हिन्दुस्तान।'' स्वतंत्रता के बाद सेकुलर नेताओं ने ऐसी नीतियां बनाईं कि जिहादी तत्वों का दुस्साहस बढ़ता गया और अब वे '...लड़कर लेंगे हिन्दुस्तान' के नारे को चरित्रार्थ करने के लिए लड़ाई शुरू कर चुके हैं।

इन जिहादी तत्वों को सबसे अधिक कष्ट इस बात से है कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी उनके 'इशारे' पर नहीं चल रहे हैं। इनसे पहले के लगभग सभी प्रधानमंत्री उनके इशारे पर नाचा करते थे। सरकार का हर मंत्री रोजा के समय इफ्तार पार्टी देता था। इन्हें हज कराने के लिए सरकारी खजाने से धन लुटाया जाता था। इन्हें खुश करने के लिए हर सेकुलर नेता जालीदार टोपी पहनता था। वोट बैंक के लिए ये नेता उन आतंकवादियों को जेल से छुड़वा देते थे, जो मंदिरों पर बम विस्फोट करते थे, निर्दोष हिंदुओं को मारते थे। अब ऐसा नहीं हो रहा है। आतंकवादियों को तो छोड़ने की बात तो दूर जम्मू-कश्मीर में प्रतिदिन तीन-चार आतंकवादी मारे जाते हैं। अब केंद्र सरकार का कोई भी विभाग रोजा-इफ्तार पार्टी का भी आयोजन नहीं करता है।

एक बात और जो आम लोगों को इसकी जानकारी नहीं है। पहले जब भी कोई विदेशी अतिथि भारत की यात्रा पर आता था तो उसे राष्ट्रपति भवन में ताजमहल का चित्र भेंट किया जाता था। यह वर्षों पुरानी परम्परा थी। 2014 के बाद से यानी जब से श्री नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री बने हैं तब से यह परम्परा बंद हो गई है। अब विदेशी मेहमानों को श्रीमद्भगवद्गीता की प्रति भेंट की जाती है। यही नहीं, जब भी श्री नरेन्द्र मोदी विदेश जाते हैं, तो वहां के अपने समकक्ष को भेंट करने के लिए श्रीमद्भगवद्गीता ले जाते हैं। इसके साथ ही वे वहां के सनातन मंदिरों में जाते हैं, और वहां रह रहे भारतीयों से भेंट भी करते हैं। श्री मोदी ऐसे पहले प्रधानमंत्री हैं, जो भारतीय संस्कृति को बचाने के लिए काम कर रहे हैं, पुराने मंदिरों को सजा और संवार रहे हैं। यहां तक कि उनके प्रयासों से दुबई और कतर जैसे मुस्लिम देशों में मंदिर बन रहे हैं। उनके प्रयासों से ही 500 वर्ष पुराना श्रीराम मंदिर का विवाद समाप्त हुआ है और अब वहां भव्य-दिव्य मंदिर बन रहा है।

भला, जिहादी तत्व इन चीजों को कैसे बर्दाश्त कर सकते हैं। इसलिए ये तत्व जानबूझकर भारत के आम मुसलमानों को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विरुद्ध भड़का रहे हैं। दुर्भाग्य ये आम मुसलमान भड़क भी रहे हैं और कभी पत्थरबाजी करते हैं, कभी हंगामा करते हैं, तो कभी किसी हिंदू का सिर तन से जुदा करते हैं।

भाषा, क्षेत्र, जाति, आरक्षण आदि के नाम पर बंटा हिंदू समाज इस खतरे को गंभीरता से नहीं देख पा रहा है। इसलिए चाहे उदयपुर में कन्हैयालाल की बर्बरतापूर्ण हत्या हो या अमरावती में उमेश कोल्हे की हत्या हो, ये घटनाएं सम्पूर्ण हिंदू समाज को उद्वेलित नहीं कर पा रही हैं। दिल्ली, उदयपुर, जयपुर आदि शहरों में हिंदू समाज ने इन घटनाओं के विरोध में प्रदर्शन जरूर किए हैं, लेकिन शेष भारत के हिंदू इन घटनाओं के विरोध में नहीं उतरे।

1947 से पहले भी हिंदू समाज की ऐसी ही स्थिति थी। उसकी बहुत बड़ी कीमत हिंदुओं को चुकानी पड़ी है। अब इस स्थिति से हिंदुओं को निकलना ही पड़ेगा, एकजुटता दिखानी पड़ेगी, नहीं तो आने वाली पीढ़ी हमें कभी क्षमा नहीं करेगी। ❐

श्रावण मास का आध्यात्मिक महत्व

■ राजन दीक्षित

श्रावण अथवा सावन हिंदू पंचांग के अनुसार वर्ष का पाँचवां महीना ईस्वी कैलेंडर के जुलाई या अगस्त माह में पड़ता है। इस वर्ष श्रावण मास 14 जुलाई से 12 अगस्त तक रहेगा। इसे वर्षा ऋतु का महीना या 'पावस ऋतु' भी कहा जाता है, क्योंकि इस समय बहुत वर्षा होती है। इस माह में अनेक महत्वपूर्ण त्योहार मनाए जाते हैं, जिसमें 'हरियाली तीज', 'रक्षाबन्धन', 'नागपंचमी' आदि प्रमुख हैं। 'श्रावण पूर्णिमा' को दक्षिण भारत में 'नारियली पूर्णिमा' व 'अवनी अवित्तम', मध्य भारत में 'कजरी पूनम', उत्तर भारत में 'रक्षाबंधन' और गुजरात में 'पवित्रोपना' के रूप में मनाया जाता है। त्योहारों की विविधता ही तो भारत की विशिष्टता की पहचान है। 'श्रावण' यानी सावन माह में भगवान शिव की अराधना का विशेष महत्व है। इस माह में पड़ने वाले सोमवार 'सावन के सोमवार' कहे जाते हैं, जिनमें स्त्रियाँ तथा विशेषतौर से कुंवारी युवतियाँ भगवान शिव के निमित्त व्रत आदि रखती हैं।

महादेव को प्रिय सावन

सावन माह के बारे में एक पौराणिक कथा है कि- जब सनत कुमारों ने भगवान शिव से उन्हें सावन महीना प्रिय होने का कारण पूछा तो भगवान भोलेनाथ ने बताया कि जब देवी सती ने अपने पिता दक्ष के घर में योगशक्ति से शरीर त्याग किया था, उससे पहले देवी सती ने महादेव को हर जन्म में पति के रूप में पाने का प्रण किया था। अपने दूसरे जन्म में देवी सती ने पार्वती के नाम से हिमाचल और रानी मैना के घर में पुत्री के रूप में जन्म लिया। पार्वती ने सावन महीने में निराहार रह कर कठोर व्रत किया और शिव को प्रसन्न कर उनसे विवाह किया, जिसके बाद ही महादेव के लिए यह विशेष हो गया।

इसके अतिरिक्त एक अन्य कथा के अनुसार, मरकंडू ऋषि के पुत्र मारकण्डेय ने लंबी आयु के लिए सावन माह में ही घोर तप कर शिव की कृपा प्राप्त की थी, जिससे मिली मंत्र शक्तियों के सामने मृत्यु के देवता यमराज भी नतमस्तक हो गए थे।

भगवान शिव को सावन का महीना प्रिय होने का अन्य कारण यह भी है कि भगवान शिव सावन के महीने में पृथ्वी पर अवतरित होकर अपनी ससुराल गए थे और वहाँ उनका स्वागत अर्घ्य और जलाभिषेक से किया गया था। माना जाता है कि प्रत्येक वर्ष सावन माह में भगवान शिव अपनी ससुराल आते हैं। भू-लोक वासियों के लिए शिव कृपा पाने का यह उत्तम समय होता है।

पौराणिक कथाओं में वर्णन आता है कि इसी सावन मास में समुद्र मंथन किया गया था। समुद्र मथने के बाद जो हलाहल विष निकला, उसे भगवान शंकर ने कंठ में समाहित कर सृष्टि की रक्षा की; लेकिन विषपान से महादेव का कंठ नीलवर्ण हो गया। इसी से उनका नाम 'नीलकंठ महादेव' पड़ा। विष के प्रभाव को कम करने के लिए सभी देवी-देवताओं ने उन्हें जल अर्पित किया। इसलिए शिवलिंग पर जल चढ़ाने का विशेष महत्व है। यही वजह है कि श्रावण मास में भोले को जल चढ़ाने से

विशेष फल की प्राप्ति होती है। 'शिवपुराण' में उल्लेख है कि भगवान शिव स्वयं ही जल हैं। इसलिए जल से उनकी अभिषेक के रूप में अराधना का उत्तमोत्तम फल है, जिसमें कोई संशय नहीं है।

शास्त्रों में वर्णित है कि सावन महीने में भगवान विष्णु योगनिद्रा में चले जाते हैं। इसलिए ये समय भक्तों, साधु-संतों सभी के लिए अमूल्य होता है। यह चार महीनों में होने वाला एक वैदिक यज्ञ है, जो एक प्रकार का पौराणिक व्रत है, जिसे 'चौमासा' भी कहा जाता है; तत्पश्चात् सृष्टि के संचालन का उत्तरदायित्व भगवान शिव ग्रहण करते हैं। इसलिए सावन के प्रधान देवता भगवान शिव बन जाते हैं।

शिव की पूजा

सावन मास में भगवान शंकर की पूजा उनके परिवार के सदस्यों संग करनी चाहिए। इस माह में भगवान शिव के 'रुद्राभिषेक' का विशेष महत्त्व है। इसलिए इस मास में प्रत्येक दिन 'रुद्राभिषेक' किया जा सकता है, जबकि अन्य माह में शिववास का मुहूर्त देखना पड़ता है। भगवान शिव के रुद्राभिषेक में जल, दूध, दही, शुद्ध घी, शहद, शक्कर या चीनी, गंगाजल तथा गन्ने के रस आदि से स्नान कराया जाता है। अभिषेक कराने के बाद बेलपत्र, शमीपत्र, कुशा तथा दूब आदि से शिवजी को प्रसन्न करते हैं। अंत में भांग, धतूरा तथा श्रीफल भोलेनाथ को भोग के रूप में चढ़ाया जाता है।

शिवलिंग पर बेलपत्र तथा शमीपत्र चढ़ाने का वर्णन पुराणों में भी किया गया है। बेलपत्र भोलेनाथ को प्रसन्न करने के लिए शिवलिंग पर चढ़ाया जाता है। कहा जाता है कि 'आक' का एक फूल शिवलिंग पर चढ़ाने से सोने के दान के बराबर फल मिलता है। हजार आक के फूलों की अपेक्षा एक कनेर का फूल, हजार कनेर के फूलों को चढ़ाने की अपेक्षा एक बिल्व पत्र से दान का पुण्य मिल जाता है। हजार बिल्वपत्रों के बराबर एक द्रोण या गूमा फूल फलदायी होते हैं। हजार गूमा के बराबर एक चिचिड़ा, हजार चिचिड़ा के बराबर एक कुश का फूल, हजार कुश फूलों के बराबर एक शमी का पत्ता, हजार शमी के पत्तों के बराबर एक नीलकमल, हजार नीलकमल से ज्यादा एक ध तूरा और हजार धतूरों से भी ज्यादा एक शमी का फूल शुभ और पुण्य देने वाला होता है।

बेलपत्र

भगवान शिव को प्रसन्न करने का सबसे सरल तरीका उन्हें 'बेलपत्र' अर्पित करना है। बेलपत्र के पीछे भी एक पौराणिक कथा का महत्व है। इस कथा के अनुसार- 'भील नाम का एक डाकू था। यह डाकू अपने परिवार का पालन-पोषण करने के लिए लोगों को लूटता था। एक बार सावन माह में यह डाकू राहगीरों को लूटने के उद्देश्य से जंगल में गया और एक वृक्ष पर चढ़कर बैठ गया। एक दिन-रात पूरा बीत जाने पर भी उसे कोई शिकार नहीं मिला। जिस पेड़ पर वह डाकू छिपा था, वह बेल का पेड़ था। रात-दिन पूरा बीतने पर वह परेशान होकर बेल के पत्ते तोड़कर नीचे फेंकने लगा। उसी पेड़ के नीचे एक शिवलिंग स्थापित था। जो पत्ते वह डाकू तोड़कर नीचे फेंक रहा था, वह अनजाने में शिवलिंग पर ही गिर रहे थे। लगातार बेल के पत्ते शिवलिंग पर गिरने से भगवान शिव प्रसन्न हुए और अचानक डाकू के सामने प्रकट हो गए और डाकू को वरदान माँगने को कहा। उस दिन से बिल्व-पत्र का महत्व और बढ़ गया।

सावन सोमवार का महत्व

श्रावण मास के प्रत्येक सोमवार को शिव के निमित्त व्रत किए जाते हैं। इस मास में शिव जी की पूजा का विशेष विधान है। कुछ भक्त तो पूरे मास ही भगवान

शिव की पूजा-आराधना और व्रत करते हैं। अधिकांश व्यक्ति केवल श्रावण मास में पड़ने वाले सोमवार का ही व्रत करते हैं। श्रावण मास के सोमवारों में शिव के व्रतों, पूजा और शिव जी की आरती का विशेष महत्व है। शिव के ये व्रत शुभदायी और फलदायी होते हैं। इन व्रतों को करने वाले सभी भक्तों से भगवान शिव बहुत प्रसन्न होते हैं। ये व्रत भगवान शिव की प्रसन्नता के लिए किए जाते हैं। व्रत में भगवान शिव का पूजन करके एक समय ही भोजन किया जाता है। व्रत में भगवान शिव और माता पार्वती का ध्यान कर 'शिव पंचाक्षर मन्त्र' का जप करते हुए पूजन करना चाहिए।

सावन के महीने में सोमवार महत्वपूर्ण होता है। सोमवार का अंक 2 होता है, जो चन्द्रमा का प्रतिनिधित्व करता है। चन्द्रमा मन का संकेतक है और वह भगवान शिव के मस्तक पर विराजमान है। 'चंद्रमा मनसो जात:' यानी 'चंद्रमा मन का मालिक है' और उसके नियंत्रण और नियमण में उसका अहम योगदान है। यानी भगवान शंकर मस्तक पर चंद्रमा को नियंत्रित कर उक्त साधक या भक्त के मन को एकाग्रचित कर उसे अविद्या रूपी माया के मोहपाश से मुक्त कर देते हैं। भगवान शंकर की कृपा से भक्त त्रिगुणातीत भाव को प्राप्त करता है और यही उसके जन्म-मरण से मुक्ति का मुख्य आधार सिद्ध होता है।

काँवर

ऐसी मान्यता है कि भारत की पवित्र नदियों के जल से अभिषेक किए जाने से शिव प्रसन्न होकर भक्तों की मनोकामना पूरी करते हैं। 'काँवर' संस्कृत

भाषा के शब्द 'कांवांरथी' से बना है। यह एक प्रकार की बहंगी है, जो बाँस की फट्टी से बनाई जाती है। 'काँवर' तब बनती है, जब फूल-माला, घंटी और घुंघरू से सजे दोनों किनारों पर वैदिक अनुष्ठान के साथ गंगाजल का भार पिटारियों में रखा जाता है। धूप-दीप की खुशबू, मुख में 'बोल बम' का नारा, मन में 'बाबा एक सहारा'। माना जाता है कि पहला काँवरिया रावण था। श्रीराम ने भी भगवान शिव को कांवर चढ़ाई थी।

हरियाली तीज

सावन का महीना प्रेम और उत्साह का महीना माना जाता है। इस महीने में नई-नवेली दुल्हन अपने मायके जाकर झूला झूलती हैं और सखियों से अपने पिया और उनके प्रेम की बातें करती हैं। प्रेम के धागे को मजबूत करने के लिए इस महीने में कई त्योहार मनाए जाते हैं। इन्हीं में से एक त्योहार है- हरियाली तीज। यह त्योहार हर साल श्रावण माह में शुक्ल पक्ष की तृतीया को मनाया जाता है। इस त्योहार के विषय में मान्यता है कि माता पार्वती ने भगवान शिव को पाने के लिए तपस्या की थी।

इससे प्रसन्न होकर शिव ने हरियाली तीज के दिन ही पार्वती को पत्नी के रूप में स्वीकार किया था। इस त्योहार के विषय में यह मान्यता भी है कि इससे सुहाग की उम्र लंबी होती है।

कुंवारी कन्याओं को इस व्रत से मनचाहा जीवन साथी मिलता है। हरियाली तीज में हरी चूड़ियाँ, हरा वस्त्र और मेंहदी का विशेष महत्व है। मेंहदी सुहाग का प्रतीक चिन्ह माना जाता है। इसलिए महिलाएँ सुहाग पर्व में मेंहदी जरूर लगाती हैं। इसकी शीतल तासीर प्रेम और उमंग को संतुलन प्रदान करने का भी काम करती है। माना जाता है कि मेंहदी बुरी भावना को नियंत्रित करती है। हरियाली तीज का नियम है कि क्रोध को मन में नहीं आने दें। मेंहदी का औषधीय गुण इसमें महिलाओं की मदद करता है। सावन में पड़ने वाली फुहारों से प्रकृति में हरियाली छा जाती है। सुहागन स्त्रियाँ प्रकृति की इसी हरियाली को अपने

ऊपर समेट लेती हैं। इस मौके पर नई-नवेली दुल्हन को सास उपहार भेजकर आशीर्वाद देती है। कुल मिलाकर इस त्योहार का आशय यह है कि सावन की फुहारों की तरह सुहागनें प्रेम की फुहारों से अपने परिवार को खुशहाली प्रदान करेंगी और वंश को आगे बढ़ाएँगी।

वर्षा का मौसम

सावन के महीने में सबसे अधिक बारिश होती है, जो शिव के गर्म शरीर को ठंडक प्रदान करती है। भगवान शंकर ने स्वयं सनतकुमारों को सावन महीने की महिमा बताई है कि मेरे तीनों नेत्रों में सूर्य दाहिने, बांये चन्द्रमा और अग्नि मध्य नेत्र है। जब सूर्य कर्क राशि में गोचर करता है, तब सावन महीने की शुरुआत होती है। सूर्य गर्म है, जो ऊष्मा देता है, जबकि चंद्रमा ठंडा है, जो शीतलता प्रदान करता है। इसलिए सूर्य के कर्क राशि में आने से झमाझम बारिश होती है, जिससे लोक कल्याण के लिए विष को पीने वाले भोलेनाथ को ठंडक व सुकून मिलता है। इसलिए शिव का सावन से इतना गहरा लगाव है।

सावन और साधना

सावन और साधना के बीच चंचल और अति चलायमान मन की एकाग्रता एक अहम कड़ी है, जिसके बिना परम तत्व की प्राप्ति असंभव है। साधक की साधना जब शुरू होती है, तब मन एक विकराल बाधा बनकर खड़ा हो जाता है। उसे नियंत्रित करना सहज नहीं होता। लिहाजा मन को ही साधने में साधक को लंबा और धैर्य का सफर तय करना होता है। इसलिए कहा गया है कि मन ही मोक्ष और बंधन का कारण है। अर्थात् मन से ही मुक्ति है और मन ही बंधन का कारण है। भगवान शंकर ने मस्तक में ही चंद्रमा को दृढ़ कर रखा है, इसीलिए साधक की साधना बिना किसी बाधा के पूर्ण होती है। ❐

उत्तम नगर में हरियाली तीज

30 जुलाई को शिवानी केन्द्र उत्तम नगर जिला, पश्चिमी विभाग में हरियाली तीज उत्सव बड़े ही हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। सबसे पहले श्रीमती रमा गुप्ता जी ने केन्द्र में हवन कराया तदुपरांत शिक्षिकाओं द्वारा सेवा गीत गाया गया। भजन मंडली की बहनों द्वारा भजन कीर्तन प्रस्तुत किया गया। सेवा भारती का परिचय प्रकल्पों की जानकारी और स्वावलंबी समाज के निर्माण में सेवा भारती की भूमिका के विषय में श्री राजेन्द्र तिवारी जी ने अपने विचार रखे। जिला प्रचारक श्री अनिल जी ने वर्तमान सामाजिक स्थिति में संस्कारों के महत्व और एकीकरण पर सवीत्तम मार्गदर्शन किया। श्री राकेश दत्त जी ने सबको धन्यवाद दिया।अंत कल्याण मंत्र

के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। तत् पश्चात् प्रसाद वितरण किया गया। कार्यक्रम बहुत ही उल्लास वर्द्धक व सफल रहा। ❐

रक्षाबंधन की कुछ रोचक कहानियाँ

■ दीप्ति

वैसे तो हम सभी रक्षाबंधन के महत्व को जानते हैं और क्या कुछ करते हैं यह भी सभी को मालूम है। किंतु रक्षाबंधन से कुछ कहानियाँ भी जुड़ी हैं। पहली कहानी है श्रीकृष्ण और द्रौपदी से जुड़ी हुई।

श्रीकृष्ण जी और द्रौपदी

द्रौपदी पांच पांडव की पत्नी थी। श्रीकृष्ण उनके मित्र और गुरु के समान थे। एक बार युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ किया। वहां उपस्थित शिशुपाल ने श्रीकृष्ण,भीष्म सहित कई लोगों का अपमान किया। जब उसके इस कृत्य की सीमा पार हो गई तो श्रीकृष्ण ने अपने सुदर्शन चक्र से उसे मार डाला। ऐसा करने से उनकी उंगली में चोट लग गई और खून निकलने लगा। यह देख द्रौपदी ने अपनी साड़ी के टुकड़े को फाड़ कर उनकी उंगली पर बांध दिया, यह देखकर श्री कृष्ण जी अभीभूत हो गए और द्रौपदी को वर दिया कि यह उसका उनके ऊपर ऋण है और वह जब भी उन्हें पुकारेगी वे उसकी रक्षा के लिए आएंगे। इसके कुछ समय बाद पांडवों ने चौपड़ में कौरवों को अपना सब कुछ हार दिया। वहां पर दुशासन द्रौपदी को जबरदस्ती दरबार में ला उसका वस्त्रहरण किया। लज्जा से रोती द्रौपदी ने श्रीकृष्ण को याद किया और उससे सहायता मांगी। चमत्कार ऐसा हुआ कि द्रौपदी की साड़ी खत्म ही नहीं हुई और दुशासन उसे खींचता रह गया। इस तरह श्रीकृष्ण ने द्रौपदी की लाज रखी। द्रौपदी की साड़ी का वह टुकड़ा राखी का ही स्वरूप था।

राजा बली और देवी लक्ष्मी

एक बार भगवान विष्णु लंबे समय तक अपनी पत्नी लक्ष्मी से दूर होकर और अपने भक्त प्रहलाद के पोते और असुर के राजा बली के द्वारपाल के रूप में खुद को छिपाने के लिए मजबूर हो गए थे। इस कारण देवी लक्ष्मी चिंतित हो गईं और अपने पति का पता लगाने वे पृथ्वी पर गईं। वे राजा बली के पास गईं और बोलीं मेरे पति कहीं दूर चले गए हैं, क्या मैं आपकी शरण में आ सकती हूं? राजा बली ने उनका बहुत ख्याल रखा। पूर्णिमा के दिन लक्ष्मी जी ने बली के हाथ पर राखी बांधी और साथ ही उनकी रक्षा के लिए प्रार्थना की। यह देखकर बली अभिभूत हो गए और बोले कि आपको मुझसे जो मांगना हो सो मांग लो। इस पर देवी लक्ष्मी ने कहा कृपा करके आप अपने द्वारपाल को मुक्त कर दें मेरे पति हैं, तब वह चौक गया और लक्ष्मी व विष्णु अपने असली रूप में प्रकट हुए। अपने वचन अनुसार उसने भगवान विष्णु को लौट जाने का अनुरोध किया। इसलिए कई जगह पर अपनी बहन के प्रति बली की भक्ति को दर्शाने के लिए राखी के त्योहार को बलेवा के नाम से भी जाना जाता है।

राजा पुरु (पोरस) और सिकंदर की पत्नी

बच्चों के लिए राखी की यह कहानी इतिहास का एक लोकप्रिय किस्सा है। जब सिकंदर ने भारत पर आक्रमण किया तो भारतीय राज्य आंबी के शासक राजा पुरु, जिन्हें पोरस के नाम से भी जाना जाता है, के साथ उसका युद्ध होने वाला था। राजा पुरु एक कुशल योद्धा थे। तब सिकंदर की पत्नी रोखसाना अपने पति की रक्षा को लेकर बहुत चिंतित थी। अपने पति की रक्षा हेतु उसने राजा पुरु को राखी भेजी और अपने पति की रक्षा का वचन मांगा। पुरु और सिकंदर के युद्ध के दौरान, राजा पुरु सिकंदर को मारने वाले थे, पर अपनी राखी

बहन से किया वादा उन्हें याद रहा। पुरु ने उसको नहीं मारा और अपने वादे और राखी के महत्व को किसी लड़ाई से बड़ा माना।

यमुना और यम अमृत का वरदान

यह राखी की कहानियों में सबसे प्राचीन है और इस दिन मनाई जाने वाले रीति जैसे आरती उतारना, मिठाई खिलाना, आदी परंपराओं को समझाती है। मृत्यु के देवता यम और यमुना भाई-बहन थे। पर 12 वर्ष तक यम ने अपनी बहन से मुलाकात नहीं की थी। यमुना इसी वजह से बहुत दुखी थी। वह अपने भाई को याद करके, उनसे मिलना चाहती थी। देवी गंगा ने यम को उनकी बहन के बारे में याद दिलाया और मिलने के लिए कहा। यमुना खुश हुई और यम का भव्य स्वागत किया। आने पर उसकी कलाई पर राखी बांधी। यम अपनी बहन के प्रेम से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने उसे अमरता प्रदान की। उन्होंने यह भी घोषणा की कि कोई भी भाई जिसने राखी बंधवाई है और अपनी बहन की रक्षा का वादा किया है, वह भी अमर हो जाएगा। उस दिन के बाद से यह परंपरा शुरू हुई। राखी के अवसर पर भाई अपनी बहन से मिलने जाता है और बहन अपनी भाई को दीर्घायु बनाने के लिए उसकी कलाई पर राखी बांधती है। ❐

आपकी पाती

सेवा समर्पण के जुलाई मास का अंक 'गुरु पूर्णिमा' अत्यन्त रोचक और भक्तिपूर्ण लगा। अनेक गुरुओं की वाणी पर लेख पढ़ने को मिले। शिष्य और गुरु के मिलन का पर्व है गुरु पूर्णिमा। माँ से बड़ा गुरु नहीं में श्री नरेन्द्र मोदी जी ने माँ-पिता के प्रति नतमस्तक होकर जीवन में उनके होने के महत्व को उत्यन्त भाव विभोर हो समझाया है। इसमें अपनेपन का एहसास होता है। छोटी-छोटी कहानियाँ 'आचरण बड़ा या ज्ञान', 'संकल्प का प्रभाव', 'समस्या का समाधान', 'क्रोध और प्रेम' आदि ने अपना प्रभाव छोड़ा। 'भगवा ध्वज को गुरु बनाना' समझ आया उसका ध्येय क्या था? आचार्य मायाराम जी को शुभकामनाएं, अपनी कहानी और कविता में सुन्दर अभिव्यक्ति। महान दानवीर भमाशाह आगे भी युगों-युगों तक याद किए जाएंगे। सम्पादकीय में मानव के मोबाईल के प्रति निष्ठा को अत्यन्त सरल ढंग से समझाया है। परोपकार अर्थात् दूसरों की भलाई करने में ही आपकी अपनी भलाई है। भगवान शिव और माँ पार्वती को सादर नमन।

- **भारती बंसल** (पूर्वी विभाग)

आजादी का उत्सव मनाएं

- अंजू पाण्डे

आओ हम आजादी का उत्सव मनाएं,
देश भक्ति के रंग में रंग जाएं।
आओ हम आजादी का...
फिर सजा दो इस धरा को
शांति के पैगाम से,
रह ना जाए रिक्त भूमि,
वीर शहीदों के नाम से।
दसों दिशाओं में फिर से चलो अपना ध्वज फहरायें...
आओ हम आजादी का...
विश्व पटल का जगमग तारा,
देखो प्यारा देश हमारा।
ज्ञान और विज्ञान का संगम,
बहती कल-कल नदिया धारा।
त्याग तपस्या की धरती पर,
हम भी कुछ करके दिखायें।
आओ हम आजादी का...
तिरंगा है हमारे देश की शान,
भारत माता है जिसका नाम
सबसे अनोखी है इस दुनिया में,
हमारी संस्कृति हमारी पहचान।
चलो मिलकर हम साथ में,
झूमे- नाचे खुशियां मनाएं
आओ हम आजादी का...❐

शबरी सेवा समिति के अनूठे कार्य

■ रश्मि दाधीच

ढाई साल का बच्चा, और वजन मात्र 6 किलो देखकर आँखें ठहर सी गईं। हृदय ईश्वर से उस बच्चे को बचाने की प्रार्थना कर रहा था, परंतु दिमाग जवाब दे चुका था। रात होते-होते खबर मिली वह नन्हीं सी जान अब इस दुनिया में नहीं है। बात एक बच्चे की नहीं थी, प्रत्येक वर्ष कुपोषण का शिकार होते करीब 70-80 बच्चे महाराष्ट्र की कर्जत तहसील के वनवासी क्षेत्रों में दम तोड़ रहे थे। किस प्रकार इन बच्चों को पोषित कर देश का भविष्य बचाया जाए? राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बाल्यकाल से स्वयंसेवक प्रमोद करंदीकर जी को इस सवाल ने इस कदर बेचैन कर दिया कि उन्होंने इस विषय पर गंभीरता से कार्य करने का निर्णय ले लिया। वर्षों तक कल्याण आश्रम में पूर्णकालिक रहे, प्रमोद करंदीकर जी आश्रम द्वारा वनवासी क्षेत्रों की परिस्थितियों को अच्छी तरह से समझ चुके थे। स्वतंत्र रूप से कुपोषण पर काम करने के लिए 2003 में उन्होंने शबरी सेवा समिति की नींव रखी। अपनी पत्नी श्रीमती रंजना करंदीकर के साथ मिलकर करजत जिले के कुछ गांवों से 2 माह से 5 वर्ष तक के करीब 700 कुपोषित बच्चों को चिन्हित किया। उन बच्चों की साफ-सफाई, नियमित चिकित्सीय जांच, पौष्टिक आहार (जिनमें दालें, मूंगफली, नागली, नारियल तेल, गाय का देसी घी इत्यादि) के नि:शुल्क पैकेट वितरित किए, और साथ ही गर्भवती महिलाओं के पोषण पर भी ध्यान दिया। साथ ही बच्चों के अभिभावकों को भी शिक्षित किया गया।

नतीजे चौंकाने वाले थे, 2002 में जहां इस तहसील में 70-80 बच्चे प्रतिवर्ष कुपोषण के कारण मौत की नींद सो जाते थे, वहीं 2008 में उसकी संख्या 3-4 तक सीमित हो गई। यानि अब तक 20, 000 बच्चों की जान बचाई जा चुकी है।

रायगड़, पालघर, ठाणे, नंदुरबार, धुले, जलगांव, सेंधवा, दादरा नागर हवेली (केंद्र शासित) 8 जिलों के वनवासी क्षेत्रों में गांव वालों की सहायता करते हुए शबरी सेवा समिति का 1600 से भी ज्यादा गांवों में कार्य चल रहा है, जिससे वनवासी क्षेत्रों के 47 कार्यकर्ता जुड़े हैं।

जीवन के साथ समस्याएं तो अनवरत चलती ही रहती हैं, वनवासी क्षेत्रों में माता-पिता दिन-रात खेतों में मेहनत मजदूरी करके बच्चों का पेट तो भर लेते हैं, परंतु बच्चों को पढ़ाने-लिखाने में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं रहती। शबरी सेवा समिति ने 2006 से सरकारी, प्राइवेट स्कूल और गांवों में अनेक शैक्षिक कार्यक्रम आयोजन करते हुए, प्रत्येक जन्माष्टमी पर पुस्तक हांडी उत्सव प्रारंभ किया. जिसके अंतर्गत बच्चों को रामायण, महाभारत एवं नैतिक शिक्षा की किताबों का नि:शुल्क वितरण किया जाता है।

कर्जत तहसील के कशेले गांव में एक नि:शुल्क छात्रावास है, जहां 35 छात्र पढ़ रहे हैं। इतना ही नहीं किशोरियों के शैक्षिक शिविर व बच्चों के साथ महिलाओं में भी पढ़ाई के प्रति जागरूकता लाने

के लिए गांवों में 10 नि:शुल्क पुस्तकालय भी खोले गए हैं।

वनवासी कल्याण आश्रम की अखिल भारतीय सह महिला प्रमुख रह चुकी श्रीमती रंजना जी बताती हैं, कि दोनों पैरों से विकलांग निर्मला की शादी नहीं हो पा रही थी, पर सिलाई सेंटर से ट्रेनिंग लेकर अपने पैरों पर खड़े होते ही उसका विवाह हो गया। आज विवाह के बाद वह घर खर्च में अपने पति का पूरा सहयोग कर रही है।

शुरवाणी गांव की कविता, जिसने ट्रेनिंग लेकर ना केवल अपना बुटीक खोला, बल्कि अपने पति का नया टैक्सी बिजनेस शुरू करने के लिए, अपनी बचत से रुपए 35000 भी बैंक में भी जमाकर दिए। कुछ ऐसी ही कहानी अंजलि की है, 6 वर्ष पहले पति की मृत्यु के बाद अंजलि सिलाई सेंटर से ट्रेनिंग लेकर आज उसी सेंटर में महिलाओं को सिलाई सिखा भी रही है, और साथ ही अपना बुटीक भी चला रही है। इस प्रकार करीब 10 सिलाई सेंटर चल रहे हैं, जिनसे 750 महिलाएं ट्रेनिंग ले चुकी हैं, और 480 महिलाएं अपने पैरों पर खड़ी हो चुकी हैं।

लाचार व्यक्तियों के लिए एक छोटा सा सहारा भी उनके जीवन को, स्वाभिमान के साथ मजबूत खड़ा रहने में बहुत सहायक होता है। दोनों हाथों से अपंग सुरेश पाडवी के लिए अपना खर्च भी चलाना बहुत मुश्किल था, पर आज वह अपने साथ अपने पूरे परिवार का पालन कर रहे हैं। एक छोटी सी परचून की दुकान जो 4 वर्ष पूर्व शबरी सेवा समिति के सहयोग से उन्हें मिली, आज उनके जीवन का आधार है। इस प्रकार करीब 460 विकलांग व नेत्रहीन लोगों की शबरी सेवा समिति द्वारा कई प्रकार से मदद की जा रही है।

वनवासी पहाड़ी क्षेत्रों में आमतौर पर व्यक्ति कृषि पर ही निर्भर रहता है, परंतु पानी की समस्या उसके जीवन में बहुत बड़ा संकट बन जाती है। समिति के सभी कार्यकर्ताओं के सहयोग से इस क्षेत्र में भी सूझबूझ और योजनाबद्ध तरीके से कार्य किया जा रहा है। पालघर, सतपुड़ा जैसे अनेक क्षेत्रों को मिलाकर करीब 950 एकड़ भूमि में सिंचाई की व्यवस्था शबरी सेवा समिति द्वारा की गई है। वृक्षारोपण को प्रेरित करते हुए धड़गांव, जव्हार, अक्कलकुवा तहसीलों में करीब 20, 000 आम व अन्य फलों के पेड़ व 50, 000 सागौन के वृक्ष लगाकर, परिवारों को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। सिंचाई व पेयजल की समस्या को देखते हुए गांव वालों के साथ मिलकर 32 कुएं, कहीं बोरवेल, कहीं पानी की टंकियां, तो कहीं पक्के सीमेंट के बांध भी बनाए गए हैं। इस प्रकार सेवा समिति द्वारा सिंचाई, कृषि, फल, बगीचे इत्यादि के जरिए करीब 5000 परिवार रोजगार पाकर आत्मनिर्भर बनने की ओर अग्रसर हैं।

अपने लिए तो सभी जीते हैं, परंतु अपने देशवासियों के लिए संपूर्ण जीवन ही समर्पित कर देना इतना सरल नहीं है। सचमुच प्रेरणादाई है, शबरी सेवा समिति के कार्य, जो वनवासी क्षेत्रों में लोगों का जीवन सरल करते हुए उन्हें देश की मुख्यधारा से जोड़ रहे हैं। ❐

(साभार : वीएसके, भारत)

प्रभु की प्राप्ति किसे होती है

■ आचार्य राजन दीक्षित

एक राजा था। वह बहुत न्यायप्रिय तथा प्रजा वत्सल एवं धार्मिक स्वभाव का था। वह नित्य अपने ठाकुर जी की बड़ी श्रद्धा से पूजा-पाठ और याद करता था। एक दिन ठाकुर जी ने प्रसन्न होकर उसे दर्शन दिये तथा कहा, ''राजन् मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हैं। बोलो तुम्हारी कोई इच्छा है!'' प्रजा को चाहने वाला राजा बोला, ''भगवन् मेरे पास आपका दिया सब कुछ है। आपकी कृपा से राज्य में सब प्रकार सुख-शान्ति है। फिर भी मेरी एक ही इच्छा है कि जैसे आपने मुझे दर्शन देकर धन्य किया, वैसे ही मेरी सारी प्रजा को भी कृपा कर दर्शन दीजिये।''

''यह तो सम्भव नहीं है'', ऐसा कहते हुए भगवान ने राजा को समझाया। परन्तु प्रजा को चाहने वाला राजा भगवान् से जिद्द करने लगा। आखिर भगवान को अपने साधक के सामने झुकना पड़ा ओर वे बोले, ''ठीक है, कल अपनी सारी प्रजा को उस पहाड़ी के पास ले आना और मैं पहाड़ी के ऊपर से सभी को दर्शन दूँगा।'' ये सुन कर राजा अत्यन्त प्रसन्न हुआ और भगवान को धन्यवाद दिया। अगले दिन सारे नगर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि कल सभी पहाड़ के नीचे मेरे साथ पहुँचें, वहाँ भगवान् आप सबको दर्शन देंगे। दूसरे दिन राजा अपनी समस्त प्रजा और स्वजनों को साथ लेकर पहाड़ी की ओर चलने लगा। चलते-चलते रास्ते में एक स्थान पर तांबे कि सिक्कों का पहाड़ देखा। प्रजा में से कुछ एक लोग उस ओर भागने लगे। तभी ज्ञानी राजा ने सबको सतर्क किया कि कोई उस ओर ध्यान न दे, क्योंकि तुम सब भगवान से मिलने जा रहे हो। इन तांबे के सिक्कों के पीछे अपने भाग्य को लात मत मारो।

परन्तु लोभ-लालच में वशीभूत प्रजा के कुछ एक लोग तो तांबे की सिक्कों वाली पहाड़ी की ओर भाग ही गयी और सिक्कों कि गठरी बनाकर अपने घर की ओर चलने लगे। वे मन ही मन सोच रहे थे, पहले ये सिक्कों को समेट ले, भगवान से तो फिर कभी मिल ही लेंगे। राजा खिन्न मन से आगे बढ़े। कुछ दूर चलने पर चांदी कि सिक्कों का चमचमाता पहाड़ दिखाई दिया। इस बार भी बचे हुये लोगों में से कुछ लोग, उस ओर भागने लगे और चांदी के सिक्कों की गठरी बनाकर अपनी घर की ओर चलने लगे। उनके मन में विचार चल रहा था कि ऐसा मौका बार-बार नहीं मिलता है। चांदी के इतने सारे सिक्के फिर मिले न मिले, भगवान तो फिर कभी मिल ही जायेंगे।

इसी प्रकार कुछ दूर और चलने पर सोने के सिक्कों का पहाड़ नजर आया। अब तो प्रजा जनो में बचे हुये सारे लोग तथा राजा के स्वजन भी उस ओर भागने लगे। वे भी दूसरों की तरह सिक्कों कि गठरियां लाद-लाद कर अपने-अपने घरों की ओर चल दिये।

अब केवल राजा और रानी ही शेष रह गये थे। राजा रानी से कहने लगे, ''देखो कितने लोभी हैं ये लोग। भगवान से मिलने का महत्व ही नहीं जानते हैं। भगवान के सामने सारी दुनिया की दौलत क्या चीज हैं..?'' सही बात है, रानी ने राजा की बात का समर्थन

किया और वह आगे बढ़ने लगे कुछ दुर चलने पर राजा ओर रानी ने देखा कि सप्तरंगी आभा बिखरता हीरों का पहाड़ है। अब तो रानी से भी रहा नहीं गया, हीरों के आर्कषण से वह भी दौड पड़ी और हीरों की गठरी बनाने लगी। फिर भी उसका मन नहीं भरा तो साड़ी के पल्लू में भी बांधने लगी। वजन के कारण रानी के वस्त्र देह से अलग हो गये, परंतु हीरों की तृष्णा अभी भी नहीं मिटी। यह देख राजा को अत्यन्त ही ग्लानि ओर विरक्ति हुई। बड़े दु:खद मन से राजा अकेले ही आगे बढ़ते गये। वहाँ सचमुच भगवान खड़े उसका इन्तजार कर रहे थे। राजा को देखते ही भगवान मुसकुराये और पूछा कि कहाँ है तुम्हारी प्रजा और तुम्हारे प्रियजन। मैं तो कब से उनसे मिलने के लिये बेकरारी से उनका इन्तजार कर रहा हूँ। राजा ने शर्म और आत्म-ग्लानि से अपना सर झुका दिया।

तब भगवान ने राजा को समझाया, ''राजन, जो लोग अपने जीवन में भौतिक सांसारिक प्राप्ति को मुझसे अधिक मानते हैं, उन्हें कदाचित मेरी प्राप्ति नहीं होती और वे मेरे स्नेह तथा कृपा से भी वंचित रह जाते हैं..!!''

कहने का अर्थ है कि जो जीव मन, बुद्धि और आत्मा से भगवान की शरण में जाते हैं, और जो सर्वलौकिक मोह को छोड़ के प्रभु को ही अपना मानते हैं वे ही भगवान की सेवा प्राप्त करते हैं। ❐

नीलम कालरा के बाल गीत

मोर

पेंकू, पेंकू गाता मोर,
सुन्दर नाच दिखाता मोर।
चमके जब बिजली बादल में,
जोरों से चिल्लाता मोर।
ठुमक-ठुमक कर फेरे लेता,
पंखों को फैलाता मोर।
जब भी रिमझिम बादल बरसे,
मन ही मन मुस्काता मोर।
बड़े प्यार से अपनी गरदन,
इधर-उधर मटकाता मोर। ❐

आलू बोला

आलू बोला मुझको खा लो,
मैं तुमको मोटा कर दूंगा।

पालक बोली मुझको खा लो,
मैं तुमको ताकत दे दूंगी।

साथ में मूली-गाजर बोले,
अगर हमें भी खाओगे,
तो खूब बड़े हो जाओगे।।
❐

गुरु की बात मानो

■ हेमंत शर्मा

नारायण दास एक कुशल मूर्तिकार थे। उनकी बनाई मूर्तियां दूर-दूर तक मशहूर थीं। नारायण दास को बस एक ही दुख था कि उनके कोई संतान नहीं थी। उन्हें हमेशा चिंता रहती थी कि उनके मरने के बाद उनकी कला की विरासत कौन संभालेगा। एक दिन उनके दरवाजे पर चौदह साल का एक बालक आया। उस समय नारायण दास खाना खा रहे थे। लड़के की ललचाई आंखों से वे समझ गए कि बेचारा भूखा है। उन्होंने उसे भरपेट भोजन कराया। फिर उसका परिचय पूछा। लड़के ने कहा कि गांव में हैजा फैलने से उसके माता-पिता और छोटी बहन मर गई। वह अनाथ है। नारायण दास को उस पर दया आ गई। उन्होंने उसे अपने पास रख लिया।

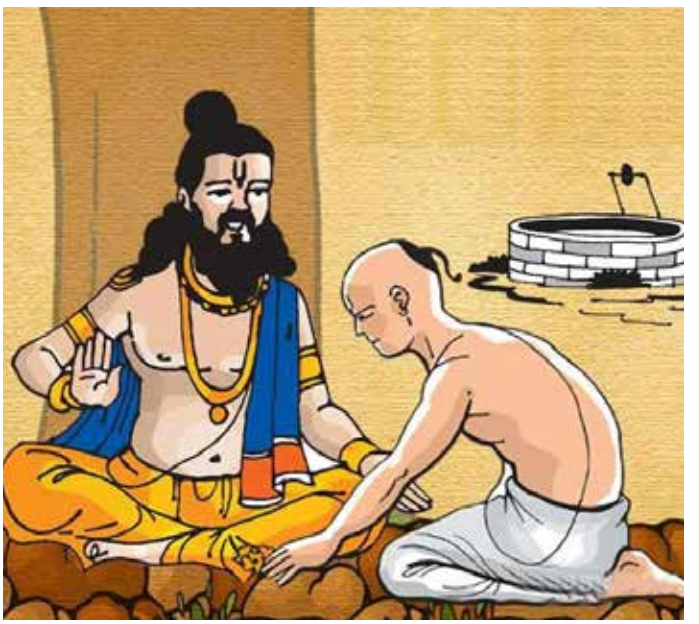

लड़के का नाम था कलाधर। वह मन लगाकर उनकी सेवा करता। काम से छुट्टी पाते ही उनके पैर दबाता। नारायण दास द्वारा बनाई जा रही मूर्तियों को ध्यान से देखता। कई बार वह बाहर से पत्थर ले आता और उस पर छैनी हथौड़ी चलाता। एक दिन नारायण दास ने उसे ऐसा करते देखा तो समझ गए कि बच्चे में लगन है। उनकी चिंता का समाधान हो गया। उन्होंने तय कर लिया कि वे अपनी कला इस बालक को दे जाएंगे। उन्होंने तय कर लिया कि वे अपनी कला इस बालक को दे जाएंगे।

उन्होंने कलाधर से कहा, ''बेटा, क्या तू मूर्ति बनाना सीखना चाहता है? मैं तुझे सिखाऊंगा।'' खुशी से कलाधर का कंठ भर आया। वह कुछ नहीं बोल पाया, बस सिर्फ उनकी ओर देखता रह गया। नारायण दास ने बड़े मनोयोग से कलाधर को मूर्तिकला सिखाई। धीरे-धीरे वह दिन भी आया जब कलाधर भी मूर्तियाँ गढ़ने में माहिर हो गया। समय किसी कलाकार को अमर होने का वरदान नहीं देता। नारायण दास बहुत बीमार पड़ गया। कलाधर ने जी जान से गुरु की सेवा की पर उनकी बीमारी बढ़ती ही गई। एक दिन उनका बुखार तेज हो गया। कलाधर उनके माथे पर गीली पट्टी दे रहा था। गुरु के मुख से कुछ अस्पष्ट स्वर फूट रहे थे, रह रहकर, ''बेटा कलाधर कला की ऊंचाई का अंत नहीं है। कारीगरी में दोष निकाले जाने का बुरा नहीं मानना कला पर अभिमान मत करना।'' अंतिम शब्द कहते-कहते उनके प्राण छूट गए।

कलाधर अपने माता-पिता की मृत्यु पर उतना नहीं रोया था, जितना गुरु की मृत्यु पर। धीरे-धीरे वह पुराने जीवन में लौट आया। मूर्तियां गढ़नी शुरू कर दीं। एक दिन उसके यहां एक साधु महाराज पधारे। साधु ने कलाधर से भगवान कृष्ण के बाल रूप की एक सुंदर मूर्ति बनाने को कहा। मूर्तिकार ने उनसे एक

महीने बाद आने को कहा। साधु को इतना लंबा समय लेने के लिए आश्चर्य हो हुआ मगर वे चुप रहे। एक महीने बाद जब वे आए तो भगवान कृष्ण की मूर्ति को देखकर दंग रह गए। माखन चुराते कृष्ण.. साधु के मुख से निकला, ''वाह, क्या खूब! बोलो कलाकार, तुम्हें क्या पारिश्रमिक चाहिए?'' कलाधर बोला, ''साधु से पारिश्रमिक! घोर पाप! महाराज, केवल आशीर्वाद दीजिए।'' उन्होंने कहा, ''बेटा मेरा आशीर्वाद है कि तू देवलोक के लोगों की वाणी समझ सकेगा।'' और फिर साधु महाराज चले गए।

एक दिन कलाधर अपनी कार्यशाला में मूर्ति गढ़ने में तल्लीन था कि उसे दो व्यक्तियों की आपसी बातचीत की आवाज सुनाई दी। साधु के आशीर्वाद से वह उनकी बातचीत समझ सकता था। ''बेचारा मूर्तिकार! पांच दिन का मेहमान और है। छठे दिन तो इसके प्राण लेने आना ही पड़ेगा। हमारा काम भी कितना क्रूर है।'' मूर्तिकार समझ गया कि ये यमदूत हैं। अब मौत का डर सबको होता ही है, सो उसे भी हुआ। वह मृत्यु से बचने को उपाय सोचने लगा। उसने हूबहू अपनी जैसी पांच मूर्तियां बनाईं। छठे दिन वह उन मूर्तियों के बीच सांस रोकर स्थिर बैठ गया। यमदूत आए। वे बुरी तरह भ्रम में पड़ गए, 'इनमें कौन असली मूर्तिकार है।' वे उसे पहचान नहीं पाए। खाली हाथ लौट आए। यमदूतों को खाली हाथ लौटते देख यमराज के क्रोध की सीमा न रही। वे गरजे, ''आज तक मेरा कोई भी दूत बिना प्राण लिए नहीं लौटा। तुम कैसे, वापस आ गए, जाओ, जैसे भी हो उस मूर्तिकार के प्राण लेकर आओ।'' यमदूत वापस कार्यशाला में पहुंचे। अब भी वे उसे पहचान नहीं पाए। अचानक एक दूत को एक युक्ति सूझी उसने अपने साथी से कहा, ''वाह क्या मूर्ति बनाई है, फिर भी मूर्तिकार है बेवकूफ। इस मूर्ति की एक आंख बड़ी, दूसरी छोटी बनाई है। दूसरी मूर्ति के अंगूठा ही नहीं है।'' मूर्तिकार से अपनी कला में दोष सहन नहीं हुआ। वह गुरु की अंतिम सीख भी भूल गया। चिल्ला पड़ा, ''झूठ! दोनों आंखें बराबर'' उसकी आवाज डूबती गई। गर्दन एक ओर लुढ़क गई। यमदूत उसके प्राण लेकर जा चुके थे। ❐

बाल कहानी

संतुष्टि

■ **नीलम कालरा (निरीक्षिका)**

एक बार भगवान बुद्ध के शिष्य आनन्द ने पूछा भगवान जब आप प्रवचन देते हैं तो सुनने वाले नीचे बैठते हैं और आप ऊंचे आसन पर बैठते हैं ऐसा क्यों? भगवान बुद्ध बोले यह बताओ कि पानी झरने की ऊपर खड़े होकर पिया जाता है या नीचे जाकर! आनंद ने उत्तर दिया झरने का पानी नीचे गिरता है, उसके नीचे जाकर ही पानी पिया जा सकता है।

भगवान बुद्ध ने कहा तो फिर प्यासे को संतुष्ट करना है झरने को ऊंचाई से ही बहना होगा। आनन्द ने हां में उत्तर दिया। यह सुनकर भगवान बुद्ध बोले, आनंद! ठीक इसी तरह यदि तुम्हें किसी से कुछ पाना है तो स्वयं को नीचे लाकर ही प्राप्त कर सकते हो और तुम्हें देने के लिए दाता को भी ऊपर खड़ा होना होगा।

यदि तुम समर्पण के लिए तैयार हो तो तुम एक ऐसे सागर में बदल जाओगे जो ज्ञान की सभी धाराओं को अपने में समेट लेता है। भगवान बुद्ध ने फिर कहा कि इतिहास गवाह है कि वही लेने वाला सबसे ज्यादा फायदे में रहता है जो पूर्ण समर्पण और विश्वास के साथ पाना चाहता है, जबकि अविश्वास के साथ पाने की इच्छा रखने वाला हमेशा स्वयं को रिक्त महसूस करता है। ❐

करोना की पकड़

■ आचार्य मायाराम पतंग

गरिमा करोना काल में भी सेवाकार्य में लगी रहती थी। कॉलेज में पढ़ते हुए ही वह सेवा भारती से जुड़ गई थी। सेवा भारती पिछड़ी बस्तियों में सेवा कार्य करती है। सेवा कार्य चार प्रकार के हैं। 1. शिक्षा संबंधी 2. स्वावलम्बन संबंधी 3. स्वास्थ्य संबंधी और समरसता संबंधी।

1. संख्या अपने कार्यकर्ताओं को उनके स्वभाव और गुण के अनुसार उनकी रुचि के सेवाकार्यों में लगाती है। गरिमा को रुचि स्वास्थ्य संबंधी कार्यों में थी। पास ही जनता कॉलोनी में मंदिर में एक चिकित्सा संबंधी सेवा केन्द्र खोला गया। डॉ. महतो मंगलवार और शनिवार को यहाँ बैठते थे। दोनों दिन प्रात: 9 से 11 बजे तथा सायंकाल 5 से 7 बजे तक बैठ थे। गरिमा दोनों दिन केन्द्र पर जाकर सेवा करती थी। उसका काम था डॉ. महतो को दिखाने से पहले पर्ची बनाना। पर्ची में रोगी का नाम पता आयु और रोग लिखना। पंजीकरण शुल्क 5 रु. भी लेना। पंजीकरण शुल्क इसी वर्ष लेना शुरु किया था। 2021 से पूर्व कोई शुल्क नही था। डॉक्टर मेहतो और कम्पाउंडर संजय ठाकुर तो सेवा भारती की चिकित्सा वैन में ही बैठकर आते थे। संजय ठाकुर वैन चालक भी था और दवाई भी देता था। डॉक्टर मेहतो रोगी की जाँच करते और पर्ची पर दवा लिखते। गरिमा का ही वास्ता बस्ती के लोगों से सबसे पहले पड़ता। इस प्रकार जनता कॉलोनी के बहुत से लोगों से उसकी जान-पहचान हो गई थी।

कोरोना काल में सेवा केन्द्र में चलने वाली बालबाड़ी की तथा सिलाई शिक्षण की कक्षाएँ बन्दकर दी गई थीं। जब सरकार ने अपने विद्यालय बन्द कर दिए तो सेवा भारती बच्चों को बुलाने और रोग के फैलाने का खतरा कैसे उठा सकती थी? चिकित्सा केन्द्र अब भी चल रहे थे। वैन दो-दो दिन अलग-अलग बस्तियों में अलग-अलग केन्द्रों पर जाती और दवा बाँटती। अत: गरिमा की सेवा कोराना काल में भी चल रही थी। हाँ कुछ नियम नए लागू कर दिए गए थे। गरिमा केन्द्र के बाहर ही कुर्सी मेज डालकर बैठती। पुरुष एवं स्त्रियों की पंक्तियाँ अलग-अलग लगाई जाती। रोगियों को तीन-तीन फुट की दूरी पर पंक्ति में खड़ा होना पड़ता। कोई बिना मास्क के नहीं दिखाई पड़े। दो कार्यकर्ता दोनों पंक्तियों की देखभाल के लिए और लगाए गए थे। ये सावधानी से कोरोना संबंधी व्यवहार निरंतर समझाते रहते थे।

गरिमा को माता-पिता ने बार-बार रोकने का प्रयास किया। कोरोना के लग जाने का भय दिखाया। सरकार की घोषित वर्जनाओं की ओर ध्यान दिलाया। परन्तु वह सप्ताह में दो-दिन अपनी ड्यूटी करने से नही रुकी। कोरोना और फैला तो सरकार ने और सख्ती करनी शुरु कर दी। धारा 144 की तरह सख्ती हो गई। मीटिंग, सभा पर तो पहले ही प्रतिबंध लगा दिया था, अब दुकानों पर भी भीड़ लगाने पर पाबंदी हो गई। कुछ दिन बाद तो बड़े-बड़े भीड़ वाले बाज़ार बन्दकर दिए गए। मौहल्ले की दुकानों पर भी भीड़ होने पर जुर्माना लगने लगा। गरिमा की मां गोमती ने बेटी को शनिवार को जाने से रोक ही लिया। गरिमा ने फोन से केन्द्र प्रमुख को सूचितकर दिया कि वह आज नही आ पाएगी। उन्होंने एक अन्य कार्यकर्ता को पर्ची बनाने पर लगा दिया।

अगले दिन रविवार सख्ती में ढील दी गई तो सेवा भारती के कार्यकर्ता उनके घर मिलने आए। गरिमा ठीक थी। दोंनों कार्यकताओं को पिता जी से मिलवाया। उन्होंनें पिताजी को समझाया कि रोग-संक्रामक है, बड़ी तेजी से फैल रहा है, परन्तु कोई भी चिकित्सा करने को आगे नही आएगा तो रोग निरन्तर बढ़ता ही रहेगा। अत: कुछ लोगों को आगे बढ़कर सेवा करनी ही पड़ेगी। चिकित्सा क्षेत्र में तो आज पहले से अधिक कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। पिताजी की समझ में बात आ गई परन्तु तभी गोमती माता ने चाय पकड़ाते हुए कहा-देखो जी, इतनी बुरी महामारी में मैं तो अपनी

बेटी को नहीं जाने दूंगी। कोई नौकरी तो है नहीं, सेवा है, जब तक हमसे हो पाई कर दी, अब नहीं।'' गोमती बोली-नहं जी, आप लोगों को भी दुविधा में क्या रखें। गरिमा को मैं नहीं जाने दुंगी।'' पिताजी बोले-आप तो चाय लीजिए।''

गोमती रसोई की ओर चली गई। तब गरिमा आई, बोली-चाय लिजिए। जब तक कोई दूसरा प्रबन्ध करें तब तक मै आऊँगी। काम तो चलना चाहिए।''

मंगल को मां ने फिर रोका पर गरिमा चुपकी से निकल गई। केन्द्रपर वैकल्पिक व्यवस्था हो चुकी थी। अत: आधा घंटे में ही वह घर वापस आ गई। मां भी संतुष्ट हो गई, परन्तु पिता से मिले सेवा के संस्कार उसके मन को बार-बार उद्वेलित कर रहे थे। उसे लग रहा था कि बीमारी तो कही भी, कभी भी पकड़ सकती है। हाँ सावधानी रखनी है। मास्क लगाना है, भीड़ नही करनी, जिसे कोरोन हो रहा हो उससे दूरी रखनी है।

गरिमा का छोटा भाई था गौरव। वह इस वर्ष दसवीं पास करके ग्यारहवीं में आया था। विद्यालय में जाना नही हो रहा था। ऑन लाइन मोबाइल से ही पढ़ता रहता था। मोबाइल से ही दोस्तों से भी बातें होती थीं। वाट्स अप, यू ट्यूब और जाने क्या-क्या जाता तो कहीं नही था परन्तु कभी-कभी कोई मित्र उससे मिलने ही घर आ जाते थे। बातें करते, चाय वाय पीतें फिर उन्हें छोड़ने बाहर तक जाता।

बात बुधवार की है, गौरव को तेज़ बुखार हो गया। पिताजी डॉ. गुप्ता के पास ले गए तो उन्होंनें कहा-लक्षण कोरोना के हैं, उसे अस्पताल ले जाओ, टैस्ट नैगेटिव आया तो वापस आकर दवा ले लेना। पोजीटिव हो तो दाखिल कर देना, इसी में भलाई है। घर मत लाना।''

डॉ. गुप्ता की सलाह थी गौरव को गुरु तेग बहादुर अस्पताल ले गए। भीड़ भारी थी, लाइने लम्बी थी। फिर डॉ. हैडगेवार अस्पताल लाए। टैस्ट करवाया। भर्ती कर लिया गया। गौरव को कोरोना पोजीटिव बता दिया गया। उपचार चालू हो गया। पिता घर आए तो गरिमा और गोमती बाट देख रही थी। पता चला, गौरव को कोरोना ने पकड़ लिया तो गोमती की आँखों से आँसू टपक पड़े। बोली-भतेरा बचाया, कहीं जाने नहीं दिया। फिर भी कोरोना कैसे हो गया?'' गरिमा बोली-''अम्मा! बीमारी किसी को भी कभी भी लग सकती है? इसमें किसी का कोई दोष नहीं। अस्पताल में इस के पास किसी को तो रहना पड़ेगा। दिनीर मैं रह लुंगी, रात को पिताजी रह जाएँगें। गोमती बोली-''तुम कही नही जाओगी। अस्पताल में मैं रहूंगी।'' पिता बोले-तुम दोनों की जरुरत नहीं है। वहाँ बहुत नर्से हैं, बाहर बैठना है, सो मैं बैठा रहूंगा। खाना भी सामने बाज़ार से खा लूंगा। हाल-चाल फोन पर बताता रहूंगा। अब तो खाना दे दो। मैं खाऊँ और जाऊँ।'' खाना तो बना ही हुआ था। गरिमा ने परोसकर दे दिया। उधर गोमती ने कपड़े बदल लिए। वह अस्पताज जाने को तैयार हो गई।

गरिमा के पिताजी के लाख मना करने पर भी वह नही मानी, अस्पताल साथ गई। फिर साथ वापस भी नहीं आई। बोली-''आप घर जाओ, गरिमा अकेली है। सुबह को खाना बनवाकर ले आना।'' महिलओं की हट के आगे पुरुष विवश हो जाता है। वह मस्तिष्क से कम मन से अधिक काम लेती हैं। कभी प्रेम की मोह की भावनाएँ मन पर हावी हो जाती है तो कभी कर्तव्य निष्ठा का और त्याग का महत्व दिखाकर अपनी बात मनवा लेती है। विवश होकर गौरव के पिता लौट आए।

चार दिन बीत गए। गौरव का बुखार उतर गया। कोरोना के लक्षण भी नहीं थे। परन्तु यह क्या? गोमती को कोरोना के सभी लक्षण साफ दिखाई पड़ रहे थे। अस्पताल में तो थे ही, टैस्ट करवाया तो कोरोना पोजीटिव पाई गई। गौरव को छुट्टी मिल गई परन्तु गोमती को भर्ती करवा दिया गया। पिताजी को अस्पताल के बाहर पार्क में डेरा लगाना पड़ा। सुबह-शाम घर जाते, फ्रैश होकर खाना-खाकर फिर आ जाते। वह दस दिन में भी ठीक नहीं हो पाई। ग्यारहवे दिन गौरव और गरिमा भी मिनले गए तो मिल नहीं पाए। गोमती आईसीयू में थी। झांककर देखा तो आक्जसीजन लगी हुई थी। पीछे से एक अन्य महिला ने कहा- ''कोरोन काल में आईसीयू में जाने के बाद कोई-कोई ही भाग्यवान वापस आता है।'' ❐

'टींस 4 सेवा' द्वारा आयोजित हुआ

'मेंटरशिप' कार्यक्रम

■ दीप्ति

आइए जानें 'टींस 4 सेवा' के एक और कार्यक्रम, जो कि हमारे बच्चों के लिए अति लाभकारी रहा। इसको हमने नाम दिया मेंटरशिप प्रोग्राम। मई माह में 'टींस 4 सेवा' की पहली आमने-सामने बैठक हुई सेवा कुंज दिल्ली में। जहां बच्चों ने अपने जीवन के लक्ष्य के बारे में बताया, वे अपने जीवन में क्या बनना चाहते हैं यह भी बताया। किन्तु यह अवसर केवल उन बच्चों के लिए था जो कि हमारे साथ कम से कम 6 महीने से जुड़े थे, वे हमारे हर कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भाग लेते थे। उन बच्चों को यह अवसर उपहार के रूप में दिया गया। अन्य बच्चों के लिए यह सुविधा उपलब्ध नहीं थी।

अब हमारी कोशिश थी उन हस्तियों का चयन करना जो कि बच्चों के द्वारा चयन किए गए क्षेत्र के दिग्गजों हों। कुछ समय बाद हमारी कोशिश पूर्ण हुई और यह कार्यक्रम जून से बच्चों को उनके मेंटर से मिलवाने का कार्य शुरू हुआ। यह सुअवसर की शुरूआत हमारे सेवा भारती के अध्यक्ष श्रीमान रमेश अग्रवाल जी के कर कमलों के साथ हुआ। जिस कार्यक्रम की शुरुआत ही इतने बड़े व्यक्ति के साथ हुई हो उस कार्यक्रम का सफल होना तो निश्चित था। हमारे कोशिशें चलती रहीं और कारवां बनता चला गया। इस अवसर का लाभ कुल 25 बच्चे उठा सके तो आइए जानते हैं बच्चों के नाम उनके विभाग, व उनसे मिलने वाले उनके मेंटर के नाम :-

क्र.	मेंटर	बच्चे, नाम और विभाग
1	श्री रमेश अग्रवाल जी (शिक्षक, व्यापार)	खुशी, केशव पुरम विभाग
2	श्री नवनीत अग्रवाल जी (व्यापार)	वैभव, झण्डेवाला विभाग
3	विक्नेष जैन जी (व्यापार)	10, बच्चे जी.डी. गोयनका स्कूल से
4	शिवानी जी (ए एन आई क्लॉथिंग)	फैंशन 10 बच्चे जी.डी. गोयनका स्कूल से
5	अमित देव जी (योगाचार्य)	पूजा, शमीना, अंशू (बाहरी दिल्ली)
6	गुरू गणेश आनंद जी -युग्म	गायन (बाहरी दिल्ली)
7	आराधना जी (मनोवैज्ञानिक)	विशु (केशव पुरम विभाग)
8	कमलिनी जी व नलिनी जी -नृत्य	रितिका (केशव पुरम विभाग)
9	इन्दू जी (सीए)	वैभव (झण्डेवाला विभाग)
10	रोहित अग्रवाल (सॉफ्टवेयर इन्जीनियर)	पलक (केशव पुरम विभाग)
11	डॉ नेहा (होम्योपैथी)	ट्विंकल (केशव पुरम विभाग)

सभी बच्चों ने अपने मेंटर से फोन नंबर लिए और मेंटर्स ने पूर्ण रूप से भविष्य में बच्चों की सहायता करने को कहा। वे जब चाहे उनसे मिल सकते हैं और उनकी शंकाओं का निवारण कर सकते हैं। अमि देव जी ने तो अपने आश्रम में 1 महीने की नि:शुल्क ट्रेनिंग देने का भी बच्चों को आश्वासन दिया, वह अपने एक अभिभावक के साथ उनके आश्रम में रहकर योग की शिक्षा ल सकते हैं और अपने आजीविका योग से चला सकते हैं। इसी तरह 'टींस 4 सेवा' के कार्यकर्ताओं के प्रयास से 25 बच्चों के जीवन की दिशा बदली जा सकी है। हमारी शुभकामनाएं सदैव उनके साथ हैं। वे अपने जीवन में नित्य नई ऊंचाइयों को छुएं। ❐

बारहपाल में आने वाली घुमंतू जातियों का महत्व

■ शैलेन्द्र विक्रम

भूमिका - घुमंतू जीवन-यापन करनें वाले लोगों से सभी का परिचय हुआ होगा। प्राय: यह समाज शहरों के मुख्य मार्गों, पार्कों, नालों या खाली पड़ी जमीनों के आस-पास छोटी-छोटी झुग्गियां बनाकर रहता दिखाई दे जाएगा। संपूर्ण समाज में इन लोगों के प्रति नकारात्मक धारणा बनी हुई है। कई जगह इन्हें जरायम पेशा वाला (हत्या और लूटपाट में संलग्न) समाज कहा जाता है। कई जगह पर इन्हें कूड़ा बीनने वाला और भीख मांगने वाला समाज भी कहा जाता है। कुल मिलाकर घुमंतू समाज को समाज के सबसे निचले पायदान पर देखा जाता है। पूरे भारतवर्ष में घुमंतू समाज के अनेकों प्रकार दिखाई देते हैं। जैसे सपेरा, भांड, नट जोगी, कंडारा, लद्धड, पारदी, सबर, गाड़िया लोहार, कंजर, सपेरा व पेरना इत्यादि। भारतीय जन मानस में कई बार समय - समय पर इन घुमंतू समाज के लोगों को उनके अस्थाई वास से हटाने के लिए प्रयास किया जाता रहा है। कई बार इन्हें बेघर भी होना पड़ता है। अनेकों बार समाज के अराजक तत्वों के द्वारा इस समाज की बहनों को परेशान भी किया जाता है। अर्थात् यह समाज मूलभूत सुविधाएं से कोंसो दूरी पर स्थित दिखाई देता है।

परंतु कुछ ऐसे भी प्रबुद्ध लोग हैं जिन्होंने इन घुमंतू समाज के लोगों के जीवन स्तर में बदलाव लाने के लिए भगीरथ प्रयत्न किया है। वास्तव में भारतीय पृष्ठभूमि में घुमंतू समाज का महत्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि सभी घुमंतू समाज के साथ अलग-अलग इतिहास जुड़ा हुआ है। कोई समाज भगवान शिव से संबंध रखता है तो कोई महाराणा प्रताप और छत्रपति शिवाजी से अपना अपना संबंध स्थापित करता है।

बारहपाल

बारहपाल के अन्तर्गत भगवान शिव से संबद्ध रखनें वाले 12 प्रकार के विशिष्ठ गोत्रों को शामिल किया जाता है। इनकी विशिष्ठता इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि ये सभी गोत्र वाले मूलत: घुमंतू समाज से संबंधित हैं। इन गोत्रों में नाथ सपेरा, बहुरूपिया भांड, ग्याहरा, कबूतरीनट, कठपुतली, जोगी, भोपा-भोपी, देया, कंडारा, वांवी, लद्धड़ व करू नामक घुमंतू जातियां शामिल हैं।

उद्देश्य - ''अलख की रोटी, पलक का खजाना। भूख लगे तो, मांगकर खाना।।'' अर्थात् समाज को जगाओ, अलख निरंजन करो। यह बताओ कि इस संसार का सार केवल शिव है। शिव तभी मिलेंगे जब आप सभी प्रेम व निष्ठा पूर्वक अपने माता - पिता, गुरुजनों छोटे व बड़ों का सम्मान आदरपूर्वक करोगे। समाज में समता की भावना को उत्पन्न करते हुए बिना रुके दूसरे स्थान को गमन करोगे। यानी आपके लिए पलक खजाना जैसा रहेगा। मतलब पालक झपकते ही स्थान परिवर्तन करना। यदि कहीं वा कभी भूख लग जाय तो तुरंत ही समाज से मांगकर भोजन करना। तात्पर्य यह है कि घूमते रहना इनके कार्य का मूल पहलू है।

इसके पीछे मान्यता है कि जब भगवान शिव जी का विवाह हो रहा था तब उस समय समस्त ज्ञानवान प्राणियों को आमंत्रित किया गया था। सभी ने बहुत अच्छे प्रकार से वहां भोजन पाया। इस बारात में कुछ

ऐसे लोग भी थे जो विभिन्न मुद्राओं वा हाव - भाव से सामाजिक जनों का मनोरंजन करते हुए आ रहे थे। इन्हे अपनी कलाबाजी दिखाते हुए काफी समय लग गया। जब ये लोग बारात में पहुंचे तब - तक भोजन समाप्त हो चुका था। इन्हें बहुत भूख लगी थी तब उन्होंने समीप में मांग कर भोजन खाया। जब भगवान शिव को यह सब मालूम हुआ तो उन्होंने इन समाज के लोगों को आदेश दिया कि आज से आप लोग विभिन्न प्रकार से समाज का जागरण और प्रबोधन करोगे। भूख लगने पर समाज से मांगकर खा लिया करना। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। तब से आज तक यह समाज भगवान शिव के दिखाएं रास्ते का अनुसरण करते हुए समाज के प्रबोधन के कार्यों में लगा हुआ है।

दिल्ली के ख्याला सपेरा बस्ती में रहने वाले किशन बहुरूपिया के अनुसार बारह पाल के इस समाज ने कई हजार वर्षो के कालक्रम में बहुत परिवर्तन देखे। हमारा संबंध भोलेनाथ से इतना मजबूत है कि हमने शिव जी से संबंधित विभन्न पंथों को अपनाकर उनके द्वारा बताए हुए रास्ते का अनुसरण अनवरत किए जा रहे हैं। इन्हें ठीक से समझने के लिए बारह पाल के समाज को समझना आवश्यक है।

1. सपेरा : बारह पाल के अन्तर्गत सबसे पहला समाज। गुरू गोरखनाथ जी और गुरू मत्स्येंद्रनाथ जी का पूर्ण अनुयायी। वीन बनाना व बजाना, सांप पकड़ना, सांप का खेल दिखाना व इनके जहर को कम करने वाली दवा का व्यापार करना।

सपेरों ने सांपों के माध्यम से समाज का प्रबोधन किया। भगवान भोलनाथ के प्रति आस्था पैदा करना इनका प्रमुख कार्य था। इस समाज ने मनुष्यों को प्रकृति के साथ रहने का चलन उत्पन्न किया। साथ ही यह भी बताया कि जहरीले से जहरीला प्राणी हमारा मित्र है। सांपो के माध्यम से कई असाध्य रोंगो का इलाज संभव है। परंतु हजारों वर्षो के लंबे संघर्ष के कारण आज हमारे बीच यह जानकारी ना के बराबर है। कई आदिवासी क्षेत्रों में आज भी सांपों के माध्यम से असाध्य रोग ठीक करने का चलन है। स्मरण रहे इस प्रक्रिया में सांपों की हत्या नहीं होती वरन् सांपों के निवास स्थलों की मिट्टी को वा सांपों द्वारा उत्पन्न की गई गर्मी ही असाध्य रोंगो के इलाज में सहायक होती है। सपेरा समाज को इसका बहुत अच्छा अनुभव है।

वास्तव में सपेरा समाज ने समस्त विश्व को बताया कि सांप मनुष्यों के शत्रु नहीं मित्र है। ठीक वैसे जैसे गाय, बैल, भैंस व बकरी इत्यादि जीव हमारे अस्तित्व के लिए अत्यंत उपयोगी है।

यह समाज सम्पूर्ण भारत वर्ष में झुग्गियों- झोपड़ियों में सदियों से रहता आ रहा है। एशिया की सबसे बड़ी सपेरा बस्ती पद्मकेश्वरपुर है। यह उड़ीसा राज्य के भुवनेश्वर में स्थित है। इस गांव में लगभग 500परिवार निवास करता है।

इस समाज के साथ एक कथा सर्वप्रचलित है। भारतवर्ष के उत्तरी भाग में सपों के राजा वासुकी का शासन था। राजा जनमेजय नाग वंश के कट्टर विरोधी थे। दोनों के बीच कई बार युद्ध हुआ। परंतु ;षि आस्तिक की सूझ - बूझ के कारण दोनों में समझौता हो गया। समझौते के कारण नाग वंश को भागमती (आज का दक्षिणी अमेरिका) जाना पड़ा। आज भी दक्षिणी अमेरिका का अमेजान जंगल संसार में सबसे बड़ा है। जहां अत्यधिक विषैले सांप रहते हैं।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि सपेरा समाज न केवल भारतवर्ष में बल्कि शेष विश्व में भी अपना विशिष्ट स्थान रखता है। सपेरे जैसे अनेकों घुमंतू समाज है जो शेष विश्व में अलग - अलग नामों से जाने जाते है। लेकिन इनका मूल निवास स्थान भारत वर्ष ही है। हमें सपेरा समाज को दीन - हीन नहीं समझना है।

2. बहुरूपिया भांड : बारह पाल के अन्तर्गत आने वाली घुमंतू जाती। इनका दूसरा नाम " ढोली राणा डूम मरासी" है। इनका काम राज्य दरबारों में रूप बदल बदल कर राज्यपरिवारों, मंत्रियों, सामंतों और प्रजाजनों का मनोरंजन करना था। परंतु रूप बदलने में एक बात का ध्यान रखना आवश्यक था कि लोगों के मनोरंजन

के साथ साथ धर्म के प्रति जन जागरण का भाव बना रहे। सामान्य अर्थों में इन्हें ही बावनरूपिया या जोकर भी कहा जाता है।

3. नट मरासी : इस घुमंतू समाज के लोग खेल संस्कृति के बहाने समाज का जागरण करते थे। जैसे रिंग से निकलना, पैर में रस्सी बांधकर खेल दिखाना आदि।

4. कबूतरी नट : इस गोत्र के लोगों का मुख्य कार्य बांस पर खेल दिखाना वा गली में रस्सी बांधकर संतुलन स्थापित करना है। यह परंपरा बहुत प्राचीन समय से भारत में रही है।

5. कंडारा : खेल संस्कृति में एक बड़ा नामी गोत्र। शिव जी से संबंधित। वहीं से निकला अद्‌भुत खेल। इस से संबंधित लोग हांडी को तोड़कर उसके मुंह के हिस्से में आग लगाकर थोड़ी दूरी से छलांग लगाकर निकलते हैं।

6. बांबी : इस गोत्र के लोग जादू का खेल (Mazic sow) य तमाशा दिखाते हैं। पूरे विश्व में जादू के खेल का यही समाज वाहक है। इसके माध्यम से इस गोत्र के लोगों ने न केवल समाज का मनोरंजन किया वरन ईश्वर के प्रति आस्था उत्पन्न करने का बहुत प्रभावशाली कार्य किया।

7. लद्धड़ : खेल संस्कृति का वाहक यह समाज शहरों या गांवों के मुख्य मार्गों में एक दूसरे के कंधे पर कूदते हुए फायर करते हुए सामाजिक जनों का मनोरंजन करते हैं। तात्पर्य यह है कि हमारे राष्ट्र में बहुत पहले से ही बारूद का ज्ञान था।

8. कारू समाज : खेल संस्कृति में एक बड़ा नाम। ये लोग एक दूसरे पर जंप करते हुए झाड़ू से एक दूसरे को मारते हैं। कालांतर में झाड़ू से मारना टोने टोटके के रूप में शामिल कर लिया गया।

9. कठपुतली : इन्हें भाट जी भी कहा जाता है। इनका मुख्य कार्य कठपुतली की नाच दिखाकर लोगों का मनोरंजन करना है। आज भारतीय समाज में कठपुतली वाले बड़ा प्रसिद्ध नाम है।

10. जोगी : इस गोत्र के लोगों ने जन जागरण की जो परम्परा सदियों पहले स्थापित की थी आज भी वह परम्परा उसी रूप में भारतीय समाज में देखी जा सकती है। इस गोत्र के लोग पीला या भगवा वस्त्र धारण करके दो, तीन या पांच लोगों के समूह में गावों और शहरों में भ्रमण करते हुए अलख निरंजन करते हैं। अर्थात् भगवान शंकर जी के प्रति लोगों की आस्था बनी रहे। भारत और भारतीयता हमेशा प्रगतिशील रहे। सभी जन स्वयं की आत्मा को ईश्वर का अंश समझें। अपनी शरीर को मंदिर जैसा समझ कर पवित्रता पूर्वक विश्व कल्याण में लगे रहें।

11. भोपा भोपी : इस गोत्र के लोग रावानत्था (सारंगी जैसा) वाद्य यंत्र को बजाते हुए गांवों गांवों में भ्रमण करते हैं। अपने वाद्ययंत्र पर इनके द्वारा छेड़ी गई तान भी समाज का प्रबोधन वा जागरण करती है।

12. देया जाति : इस गोत्र के लोग झाज (सूप) बनाते हैं। भारत में सूप और झाड़ू को लक्ष्मी माना जाता है। सूप से चावल, दाल, चना आदि के धूल या छोटे कड़ों को साफ किया जाता है। उत्तर भारत में इस प्रक्रिया को पछोरना कहते हैं। भारतीय समाज में घर में प्रयोग हेतु आवश्यक सामानों को हर कोई नही बना सकता था। प्राय: प्रत्येक सामान के निर्माण हेतु कोई विशेष जाति का निर्धारण हुआ था। हमारे गांवों में आज भी यह परंपरा देखी जा सकती है। पहले बहुत सम्मान हासिल था देया समाज को। परन्तु एक लंबे संघर्ष के कारण बहुत कुछ नष्ट प्राय जैसा हो गया था।

निष्कर्ष : वास्तव में घुमंतू समाज कोई अलग समाज नहीं है। यह समाज हमारे समाज का ही वह वर्ग है जिसने शेष समाज की भलाई के लिए अपना और अपने परिवार का निजी जीवन, सुख व सुविधाओं का त्याग कर दिया। इनके मूल में वास्तविक भारतीयता विद्‌यमान रही है। परिवर्तनशील युग में घुमंतू समाज के योगदान को प्रासंगिक नहीं समझा गया। इन्हें वह स्थान नहीं मिला जिनके ये हकदार थे और आज हैं भी। ❐

लस्सी का कुल्हड़

■ **विनोद श्रीवास्तव**

एक दूकान पर लस्सी का ऑर्डर देकर हम सब दोस्त-आराम से बैठकर एक दूसरे की खिंचाई और हंसी-मजाक में लगे ही थे कि, लगभग 70-75 साल की बुजुर्ग स्त्री पैसे मांगते हुए हमारे सामने हाथ फैलाकर खड़ी हो गई।

उनकी कमर झुकी हुई थी, चेहरे की झुर्रियों में भूख तैर रही थी। नेत्र भीतर को धंसे हुए किन्तु सजल थे।

उनको देखकर मन में न जाने क्या आया कि मैंने जेब में सिक्के निकालने के लिए डाला हुआ हाथ वापस खींचते हुए उनसे पूछ लिया: दादी लस्सी पियोगी?

मेरी इस बात पर दादी कम अचंभित हुईं और मेरे मित्र अधिक क्योंकि अगर मैं उनको पैसे देता तो बस 5 या 10 रुपए ही देता लेकिन लस्सी तो 40 रुपए की एक है।

इसलिए लस्सी पिलाने से मेरे गरीब हो जाने की और उस बूढ़ी दादी के द्वारा मुझे ठग कर अमीर हो जाने की संभावना बहुत अधिक बढ़ गई थी।

दादी ने सकुचाते हुए हामी भरी और अपने पास जो मांग कर जमा किए हुए 6-7 रुपए थे, वो अपने कांपते हाथों से मेरी ओर बढ़ाए।

मुझे कुछ समझ नहीं आया तो मैने उनसे पूछा, ये किस लिए?

इनको मिलाकर मेरी लस्सी के पैसे चुका देना बाबूजी।

भावुक तो मैं उनको देखकर ही हो गया था। रही बची कसर उनकी इस बात ने पूरी कर दी।

एकाएक मेरी आंखें छलछला आईं और भरभराए हुए गले से मैने दुकान वाले से एक लस्सी बढ़ाने को कहा।

उन्होने अपने पैसे वापस मुट्ठी मे बंद कर लिए और पास ही जमीन पर बैठ गई।

अब मुझे अपनी लाचारी का अनुभव हुआ क्योंकि मैं वहां पर मौजूद दुकानदार, अपने दोस्तों और कई अन्य ग्राहकों की वजह से उनको कुर्सी पर बैठने के लिए नहीं कह सका।

डर था कि कहीं कोई टोक ना दे। कहीं किसी को एक भीख मांगने वाली बूढ़ी महिला के उनके बराबर में बिठाए जाने पर आपत्ति न हो जाये।

लेकिन वो कुर्सी जिस पर मैं बैठा था, मुझे काट रही थी।

लस्सी कुल्लड़ों में भरकर हम सब मित्रों और बूढ़ी दादी के हाथों मे आते ही मैं अपना कुल्लड़ पकड़कर दादी के पास ही जमीन पर बैठ गया क्योंकि ऐसा करने के लिए तो मैं स्वतंत्र था।

इससे किसी को आपत्ति नहीं हो सकती थी।

हां, मेरे दोस्तों ने मुझे एक पल को घूरा, लेकिन वो कुछ कहते उससे पहले ही दुकान के मालिक ने आगे बढ़कर दादी को उठाकर कुर्सी पर बैठा दिया और मेरी ओर मुस्कुराते हुए हाथ जोड़कर कहा:

ऊपर बैठ जाइए साहब! मेरे यहां ग्राहक तो बहुत आते हैं, किन्तु इंसान तो कभी-कभार ही आता है।

दुकानदार के आग्रह करने पर मैं और बूढ़ी दादी दोनों कुर्सी पर बैठ गए हालांकि दादी थोड़ी घबराई हुई थी मगर मेरे मन में एक असीम संतोष था।

तुलसी इस संसार में, सबसे मिलिए धाय।
ना जाने किस वेश में, नारायण मिल जाय।। ❐

मानस का सुन्दर कांड

■ कृष्ण लाल भाटिया 'शिक्षार्थी'

सुन्दर काण्ड तुलसीदास जी रचित 'राम रचित मानस' का एक मात्र ऐसा अध्याय है, जिसमें केवल हनुमान जी के कार्य, शौर्य, राम के प्रति पूर्ण समर्पण और नि:स्वार्थता को दर्शाया गया है। लंका को त्रिकूटाचल पर्वत पर स्थित बताया गया है। इन तीन पर्वत श्रेणियों के नाम हैं-(1) सुबैल पर्वत, (2) नील पर्वत और (3) सुन्दर पर्वत।

सुन्दर पर्वत पर अशोक वाटिका थी जिसमें सीता जी को रखा गया था। इसी सुन्दर पर्वत के विषय में विभीषण ने हनुमान जी को बताया। इसी सुन्दर पर्वत की अशोक वाटिका में हनुमान को सीता माता के दर्शन हुए, यहीं हनुमान जी को अपना पराक्रम दिखाने का अवसर मिला, इसलिए इस अध्याय का नाम 'सुन्दर काण्ड' हुआ।

हनुमान जी ने बल-बुद्धि और विद्या एवं भक्ति पूर्ण समर्पण के कारण प्रत्येक कार्य में सदैव ही सफलता प्राप्त की, अत: 'सुन्दर काण्ड' के पाठ से व्यक्ति को मानसिक शक्ति प्राप्त होती है, अपने कार्य को पूर्ण करने के लिए आत्मविश्वास जागता है। 'सुन्दर काण्ड' के पाठ से नकारात्मक शक्तियां दूर हो जाती हैं और सकारात्मक भावों का उदय होता है। किसी व्यक्ति के जीवन में जब ज्यादा परेशानियां आने लगें, जब कोई काम नहीं बन पा रहा हो, आत्मविश्वास की कमी हो या कोई और समस्या हो तो 'सुन्दर काण्ड' पाठ से शुभ फल प्राप्त होने लग जाते हैं। कई ज्योतिषी और सनत भी विपरीत परिस्थितियों में 'सुन्दर काण्ड' का पाठ करने की सलाह देते हैं।

'राम काज लगि तब अवतारा' फिर तुम चुप्पी लगाए क्यों बैठे हो, ऐसा कर कर जामवन्त ने हनुमान जी को लंका जाने और सीता जी का पता लगाने के लिए प्रेरित किया।

जामवन्त से आदेश पाकर हनुमान जी तुरन्त लंका की ओर यूं चल पड़े मानो राम जी का बाण चला हो परन्तु तभी मैनाक पर्वत ने उन्हें थोड़ा विश्राम कर लेने की सलाह दी, हनुमान जी का जवाब था- राम काजु कीन्हे बिना मोहि कहां विश्राम।।

दूसरी बाधा खड़ी की देवताओं ने परीक्षा लेने के लिए। सर्पों की माता सुरसा ने अपना बदन बढ़ा कर उन्हें खा लेना चाहा, बहुत विनय करने पर भी जब वह नहीं मानी तो जैसे ही सुरसा ने सात योजन मुंह फैलाया, हनुमान जी ने अत्यन्त लघु रूप बनाकर उसके मुंह में प्रवेश किया और जब तक सुरसा मुंह बन्द कर पाती, वे तुरन्त ही बाहर आ गए। सुरसा उनकी बुद्धिमत्ता से प्रसन्न हो गई और हनुमान जी को आगे बढ़ जाने दिया।

अगली बाधा थी- 'निसिचरि एक सिधु महुं

रहई।' इस राक्षसी (सिंहिंका) के कपट को पहचान कर हनुमान जी उससे रूष्ट हो गए, ऐसी भोले-भाले पक्षियों को छल-कपट से मारने वाली राक्षसी को हनुमान जी ने मार देना ही ठीक समझा। अब एक बड़े पर्वत पर चढ़ कर हनुमान जी ने लंका को देखा, वहां से लंका बहुत सुन्दर लग रही थी।

अति लघु रूप धर कर हनुमान जी ने लंका में प्रवेश करना चाहा तो लंका की द्वारपाल लंकिनी ने उन्हें रोक लिया तब हनुमान जी ने उसे एक घूंसा मार कर अचेत कर दिया, होश में आने पर डर कर यह कहते हुए उसने रास्ता दे दिया कि अरे तुम तो राम काज करने आए राम के दूत हो अतः तुम्हें रोकना उचित नहीं है।

अब हनुमान जी ने एक भवन से दूसरे भवन तक अनेक भवनों में झांका मगर बैदेही (सीता जी) उन्हें कहीं दिखाई नहीं दीं। इतने में उन्हें एक 'रामायुक्त अंकित गृह' दिखा जिसके बाहर तुलसी का पौधा भी लगा हुआ था। वे सोच ही रहे थे कि यह किसी सज्जन पुरुष का घर है। इतने में विभीषण सुबह उठकर 'राम-राम' सुमिरन करते हुए बाहर आया। दोनों का परिचय हुआ तो विभीषण ने प्रसन्न होकर कहा, 'अब मोहि भा भरोसा हनुमन्ता। बिनु हरि कृपा मिलहि नहिं सन्ता।।'

विभीषण ने हनुमान जी को अशोक वाटिका के बारे में बताया जहां सीता जी को रखा गया था। हनुमान जी अशोक वाटिका पहुंचे और पेड़ों में छुप कर उदास बैठी सीता जी को देखा, इतने में रावण वहां आ गया। रावण सीता जी को साम-दान-भय-भेद दिखा कर समझााने लगा, मगर सीता जी ने उसकी एक बात भी नहीं सुनी और उसे अपमानित किया तब रावण अपनी पत्नी मंदोदरी के समझाने पर सीता जी को धमकाता हुआ वहां से चला गया।

अन्य राक्षसियां तो सीता जी को त्रास देने लगीं किन्तु त्रिजटा नाम की समझदार राक्षसी ने सीता जी को ढांढस बंधाया और कहा कि एक बानर लंका को जला देगा और रावण का अहंकार शीघ्र ही टूटेगा, यह युद्ध में हारेगा और तुम अपने पति श्रीराम जी के पास जाओगी, ऐसा सपना मैंने देखा है अतः तुम धीरज धरो, शीघ्र ही यह सब सत्य होगा, इस प्रकार समझा कर त्रिजटा वहां से चली गई।

रात्रि बीतने को हुई तो हनुमान जी ने राम जी की अंगूठी सीताजी के सामने डाल दी, जिसे सीता जी ने तुरन्त उठा लिया। उस समय हनुमान जी वृक्ष पर बैठे हुए राम जी का गुणगान करने लगे, तब सीता जी ने उन्हें प्रकट होने की प्रार्थना की।

हनुमान जी छोटे से बानर रूप में वृक्ष से उतर कर सीता जी के चरणों में बैठ गए। सीता जी को बड़ा आश्चर्य हुआ। हनुमान जी ने पूरी बात विस्तार से समझाई, सीता जी को धीरज दिया और तब सीता जी को विश्वास दिलाने के लिए अपना विशाल शरीर दिखाया। तब सीता जी से अनुमति लेकर उन्होंने अपनी भूख मिटाने के लिए उछल-कूद कर वृक्षों से तोड़-तोड़ कर फल-फूल खाना शुरू किया। जिस किसी ने उन्हें रोका, उसकी हनुमान जी ने खूब धुनाई की, रावण का पुत्र अक्षय कुमार (अच्छ कुमार) तो भयंकर रूप से लड़ा और मारा गया। रावण ने तब मेघनाद को भेजा। मेघनाद जब हारने लगा तो उसने 'ब्रह्मास्त्र' का प्रयोग किया जिससे हनुमान जी मूर्छित हो गए और पकड़ कर रावण के दरबार में लाए गए।

हनुमान जी का रावण से कुछ इस प्रकार संवाद हुआ - हनुमान जी ने रावण से कहा महाराज मैं आपकी प्रभुता से खूब परिचित हूं। आपका सहसबाहु और बालि से भी खूब युद्ध हुआ था, यह सुनकर रावण खिलखिला कर हंसने लगा। हनुमान जी ने रावण को समझाने की पूरी कोशिश की परन्तु महाअभिमानी रावण हंसकर बोला- अरे बानर! ज्यादा ज्ञानी और गुरु बन कर उपदेश मत करो। उल्टे उसने राक्षसों से कहा कि इस मारो, परन्तु इतने में विभीषण वहां आ गया और उसने कहा कि राम के दूत को मारना उचित नहीं होगा, कोई और दण्ड दे दिया जाय। तब

यह निश्चय हुआ कि हनुमान जी की पूंछ में कपड़ा बांध कर घी-तेल डाल कर इसकी पूंछ जला दी जाए।

पूंछ में आग लगा दिए जाने पर हनुमान जी लंका में उछलते-कूदते फिरे। प्रभु प्रेरणा से उस दिन हवा भी इतनी तेज चली कि सारी लंका धू-धू कर जलने लगी। हनुमान जी ने दौड़-भाग कर अन्त में सिन्धु में जाकर पूंछ में लगी आग बुझाई, थोड़ा विश्राम किया और सीता जी के आगे हाथ जोड़कर खड़े हो गए। तब सीता जी ने अपनी 'चूड़ामनि' उतार कर उन्हें दी और कहा कि राम जी से कहना कि वे जल्दी से लंका आकर उसे ले जाएं।

हनुमान जी घोर गर्जना करते हुए समुद्र पार कर लंका से लौट आए, अंगद के साथ मिलकर भर पेट फल खाए। तब सुग्रीव और जामवन्त को साथ लिए सभी बानर राम जी से और लक्ष्मण जी से मिले। जामवन्त ने हनुमान जी द्वारा किये गए इस कार्य का विस्तार से उल्लेख किया। हनुमान जी ने सीता जी की निशानी वह चूड़ामनि राम जी को दी, राम जी ने उस पवित्र चूड़ामणि को हृदय से लगा लिया। सीता जी के दुख को सुनकर राम जी की आंखों में आंसू आ गए तब राम जी का ध्यान बांटने के लिए हनुमान जी बोले-

कह हनुमंत विपत्ति प्रभु सोई।
जब तव सुमिरन भजन न होई।।

हनुमान जी राम जी से कहने लगे अब तो जल्दी से बानर-भालू की सेना ले चलिए और राक्षसों को जीत कर सीता जी को ले आइये। इस प्रकार यह मानस के 'सुन्दर काण्ड' का अर्ध विराम हुआ।

मानस का सुन्दर काण्ड (2)

जामवन्त से सीता जी की खोज का साहसपूर्ण विवरण सुनकर प्रभु राम जी ने हनुमान जी के कार्य की खूब प्रशंसा की ओर आशीर्वाद देने को हाथ उठाया जिसे देखकर शंकर जी भाव-विभोर हो गए। परन्तु हनुमान जी ने तो कहा कि प्रभु मैंने तो कुछ भी नहीं किया, उन्होंने मेरी पूंछ में आग लगा दी तब मैं बस इधर-उधर उछलता-कूदता फिरा, आपकी कृपा से लंका जल गई।

उधर राम जी की सेना समुद्र के किनारे पहुंची, उधर लंका में चिन्ता की लहर दौड़ गई, सब भयभीत थे, मन्दोदरी ने भी रावण को समझाने की चेष्टा की किन्तु उसने किसी की एक न सुनी। इतने में रावण की राज-सभा में विभीषण आ गया। उसने विनय करके रावण को बार-बार समझाया कि सीता जी राम जी को लौटा दीजिए, इसी में लंका की भलाई है।

रावण के सचिव माल्यवंत ने भी कहा कि विभीषण की सलाह मान लेनी चाहिए, यही हितकर है, यही सुमति की बात है-

जहां सुमति तहं सम्पति नाना।
जहां कुमति तहं सम्पति नाना।।

विभीषण ने बार-बार रावण के चरण पकड़ कर विनती की किन्तु रावण ने उसे पैरों से ठोकर मार दी। बहुत अपमानित होकर विभीषण ने कहा कि राम जी का संकल्प सत्य है, आपकी इच्छा अनुसार मैं अब श्रीराम जी की शरण में जा रहा हूं, मुझे दोष न दीजियेगा। यद्यपि सुग्रीव ने कहा कि विभीषण को शरण देना ठीक नहीं है, वह शायद हमारा भेद लेने आया हो, किन्तु हनुमान जी के कहने पर राम जी मान गए कि शरणागत को शरण में न लेना पाप है। इस प्रकार विभीषण को राम जी ने सादर अपने पास बुला लिया। राम जी ने उसे हर तरह से धीरज बंधाया और उसे विश्वास दिलाया कि अब तुम ही लंका के अधिपति हो, उन्होंने सिंधु जल लेकर विभीषण का राजतिलक कर दिया।

अब राम जी ने उससे पूछा कि समुद्र को पार कर कपि सेना लंका में कैसे प्रवेश करे वह उपाय बताओ। विभीषण ने कहा कि सागर को वाणों से सुखाया तो जा सकता है किन्तु अच्छा यह है कि सागर तटवासियों से कोई अन्य कम हानिकारक उपाय पूछा जाए।

राम जी ने लक्ष्मण से कहा एक बार सागर से

विनय करके देख लेते हैं फिर जो तुम कर रहे हो वैसा ही करेंगे। विभीषण के जाने के बाद रावण को होश आया, उसने तुरन्त अपने दत (जासूस) भेजे जो राम जी की सेना की खबर उसे दे सके, लेकिन वे पकड़ लिए गए। लक्ष्मण जी ने उन्हें वानरों द्वारा मारे जाने से बचाया और कहा कि रावण को यह सन्देश दे दो कि सीताजी हमें लौटा दो और आकर हमें मिलो नहीं तो मरने को तैयार हो जाओ। जब दूत रावण के पास लौटे तो रावण अपने आप कहने लगा- क्यों, वे वनवासी तुम्हें कहीं मिले या डर कर भाग चुके हैं। दूतों ने कहा- महाराज वहां तो युद्ध की पूरी तैयारी हो चुकी है।

दूतों ने रावण को लक्ष्मण का सन्देश पकड़ा दिया और बहुत तरह से समझाया किन्तु जैसे ही उन्होंने सीता जी के लौटा देने की बात कही, रावण ने चरण प्रहार करके उन दूतों का भी अपमान किया अत: वे भी राम जी के पास चले गए। इधर समुद्र पर भी राम जी द्वारा की गई विनय का कोई प्रभाव नहीं हुआ। अत: राम जी ने क्रोध करके एक बाण छोड़ा, जिससे समुद्र में आग लग गई। जब समुद्र के जीव-जन्तु व्याकुल होकर गर्मी से तड़पने लगे तो समुद्र देव सोने के थाल में मणियां लेकर आ गए और बार-बार क्षमा मांगने लगे। राम जी ने समुद्र देव से कहा अब तुम ही कोई दूसरा उपाय बता दो। समुद्र देव ने सुझाया कि आपके पास नल और नील नाम के दो भाई हैं जो समुद्र पर सेतु पर सेतु बनाने की कला जानते हैं, उनसे समुद्र पर सेतु बनवाइये और सेना सहित लंका पहुंच जाइये। राम जी ने तुरन्त प्रभाव से सागर-सेतु बनवाना शुरू कर दिया।

तुलसी दास जी कहते हैं- जिस प्रकार राम-सेतु से होकर बानर-भालू सागर पार कर गए उसी प्रकार राम सुमिरन रूपी राम सेतु से मनुष्य भी भव-सागर पार जा सकता है। इस प्रकार श्रीराम चरित मानस के 'सुन्दर काण्ड' का पाठ सम्पूर्ण हुआ। ❐

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

तीज महोत्सव

दिनांक 28 जुलाई वीरवार को सेवा भारती उत्तरी विभाग द्वारा तीज महोत्सव राजवंश गार्डन, नरेला में बहुत धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती सुनीता जी (सह विभाग कार्यवाहिका राष्ट्रीय सेविका समिति) द्वारा की गई। विभाग उपाध्यक्ष श्रीमती प्रीति वर्मा जी के द्वारा संबोधन दिया गया। सर्वप्रथम भारत माता की वंदना के साथ कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। तत्पश्चात् अनेक रंगारंग कार्यक्रम हुए। बहुत सारी बहनों ने देशभक्ति गीतों पर एवं धार्मिक गीतों पर सुन्दर नृत्य का प्रस्तुतीकरण किया। अनेक प्रकार के खेल एवं प्रश्न-उत्तर भी श्रीमती कंचन जी एवं श्रीमती अनुरेखा जी द्वारा संचालित किए गए। अनेक बहनों के हाथों पर मेंहदी लगाई गई, राखी एवं अन्य सामान की स्टॉल लगी झूलों का भी बहनों ने आनंद लिया। अल्पाहार में चाय पकौड़े एवं भोजन के साथ-साथ सभी बहनों ने स्वादिष्ट गोलगप्पे का भी आनंद उठाया, बहुत ही सुंदर फार्म हाउस में हल्की-हल्की रिमझिम फुहारों ने मौसम को भी सुहाना बना दिया। अंत में सभी शिक्षिका बहनों को सूट एवं मिठाई उपहार स्वरूप दी गई। विभाग अध्यक्ष श्री राजेन्द्र जी एवं विभाग मंत्री श्री आजाद जी के सान्निध्य में कार्यक्रम सफलता से सम्पन्न हुआ।

आरकेपुरम विभाग में हरियाली तीज

आज आर के पुरम विभाग में हरियाली तीज का कार्यक्रम बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, प्रान्त से अंजू दीदी ने हरियाली तीज के बारे में बहनों को बताया, अपराजिता से जोली दीदी ने दीप प्रज्ज्वलित कर के कार्यक्रम का शुभारंभ किया, इसके बाद मेहंदी प्रतियोगिता, अंत्याक्षरी प्रतियोगिता, आदि का आयोजन किया और सभी प्रतियोगियों को जो प्रथम द्वितीयऔर तृतीय आए उनको उपहार दिए गए, अंत मैं सभी को अल्पहार और मिठाई से मुँह मीठा किया गया, कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा।

कालकाजी जिले में तीज मना

दक्षिणी विभाग में कालका जी जिले द्वारा आयोजित हरियाली तीज कार्यक्रम 28 जुलाई, 2022 को अपराह्न 3.00 बजे स्थान-सुधार कैम्प, कालकाजी पर किया गया। सभी बहनों हरियाली तीज कार्यक्रम के इस पावन पर्व को बहुत ही धूमधाम से मनाया।

मादीपुर में किशोरी विकास कार्यक्रम

गत 18 जुलाई, 2022 को मादीपुर केंद्र पर किशोरी विकास कार्यक्रम दोपहर डेढ़ बजे से तीन बजे तक चला, जिसमें मुख्य भूमिका तिलक जिला की कार्यकर्ता श्रीमती इन्दिरा शर्मा जी की रही। उन्होंने सरल व प्रभावी शब्दों में अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यक्रम में केशवपुरम विभाग मंत्री श्री राम सेवक जी, तिलक जिला मंत्री श्री अशोक शर्मा जी व मादीपुर केंद्र के पालक श्री मनोहर लाल जी उपस्थित रहे तथा विशेष कार्यकर्ता श्रीमती कमलेश चौबे जी, श्रीमती स्मिता यादव जी व मादीपुर केंद्र की सभी शिक्षिकाओं ने भाग लिया।

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
पोस्टिंग तिथि 6-7 अगस्त, 2022, प्रकाशन तिथि-5 अगस्त, 2022
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नं. U(C)-166/2022-24
DL(ND)-11/6188/2022-23-24
अग्रिम शुल्क के बिना प्रेषण

टीन्स फॉर सेवा चित्रों में

(विस्तृत रिपोर्ट पेज 26 पर)

सुदामापुरी में गुरुपूजन कार्यक्रम

सुदामापुरी माधव सेवा केन्द्र में गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर वनवासी कल्याण संघ के द्वारा गुरु पूजा का उत्सव मनाया गया। इसी केन्द्र में योग्यता जूडो कराटे सीने वाले 22 प्रशिक्षार्थी बच्चे तथा उनके अभिभावक उपस्थित रहे। उन्होंने अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किए। अध्यक्ष श्री सुरेश गुप्ता जी तथा मुख्य अतिथि आचार्य मायाराम पतंग जी ने दीप प्रज्ज्वलन किया। माता सरस्वती, डॉ. हेडगेवारजी एवं श्रीगुरुजी के चित्र पर पुष्प अर्पित किए। सभी अतिथियों तथा बच्चों ने भी बारी से पुष्प चढ़ाए। लक्ष्मी देवी तथा प्रशिक्षिका आचार्या ने देशभक्ति गीत सुनाए। आचार्य मायाराम पतंग ने गुरुपूजन की परंपरा के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। संचालन श्री सुभाष जी ने किया। धन्यवाद श्री सुरेश गुप्ता जी ने किया। फरीदाबाद में आयोजित प्रतियोगिता में इस केन्द्र के तीन बच्चों ने पुरस्कार तथा प्रतीक चिह्न प्राप्त किए थे, उनको भी यहां प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। कल्याण मंत्र के सामूहिक पाठ के पश्चात् प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

प्रतियोगिता में सफल हुए बच्चों को प्रमाणपत्र देते आचार्य मायाराम पतंग और अन्य अतिथि

मुद्रक/संपादक/प्रकाशक: इन्दिरा मोहन द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।